Email- projnvu@gmail.com

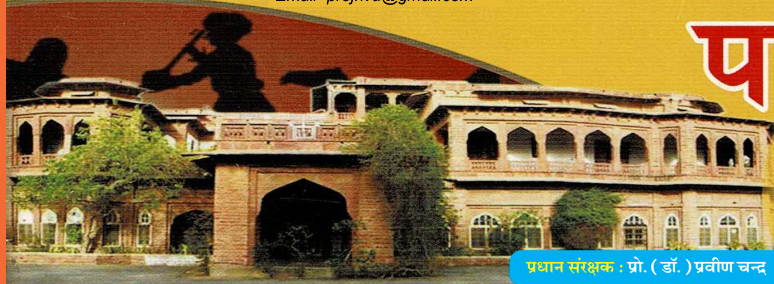

परिसर समाचार

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
का समाचार-पत्र

प्रधान संरक्षक : प्रो. (डॉ.) प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी, कुलपति

विशेषांक : वर्ष - अक्टूबर, 2021 से जनवरी, 2022

विश्वविद्यालय में मनाया गया 73वाँ गणतंत्र दिवस

कुलपति ने किया ध्वजारोहण

विश्वविद्यालय परिवार की ओर से 73वाँ गणतंत्र दिवस केन्द्रीय कार्यालय प्रांगण में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. पी.सी. त्रिवेदी, कुलसचिव श्रीमती गोमती शर्मा, वित्त नियंत्रक मंगलाराम जी विश्नोई, सिंडीकेट एवं सीनेट सदस्य, संकायों के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, निदेशक, शिक्षकगण, अधिकारीगण, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में नया परिसर के मुख्य द्वार पर स्थित जय नारायण व्यास की मूर्ति तथा गौरवपथ पर स्थित महापुरुषों की मूर्तियों पर माल्यार्पण किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ ध्वजारोहण के साथ राष्ट्रगान से हुआ। कुलपति प्रो. पी.सी. त्रिवेदी ने विश्वविद्यालय में निरन्तर सेवाभाव के कार्यो के लिए अशैक्षणिक कर्मचारियों का सम्मान किया। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा कि मैं गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व को व्यापक रूप में ग्रहण करता हूँ तो अनेकानेक विचार सामने आते हैं। पहला विचार तो यही है कि किसी भी देश का निर्माण एवं विकास केवल भौतिक संसाधनों से नहीं हो सकता है। देश की वास्तविक शक्ति उसके नागरिकों में निवास करती है। वस्तुतः नागरिक ही देश की सृजनात्मक और रचनात्मक ताकत हैं इसलिये प्रबुद्ध एवं सक्रिय नागरिकता ही देश की सबसे बड़ी आशा है, सबसे बड़ी अपेक्षा है। विचार एवं व्यवहार दोनों स्तरों पर श्रेष्ठ एवं प्रबुद्ध नागरिकता को प्रोत्साहित, प्रेरित एवं संगठित करना ही गणतांत्रिक देश के रूप में हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है। यही देश के कल्याण का प्रमुख पाथेय है।

मैं इस विश्वविद्यालय को लेकर बहुत आशान्वित हूँ। यह सही है कि इस समय हमारे सामने अनेकानेक चुनौतियाँ हैं। इन समस्याओं को न तो हमने समग्रता से समझा है और न इनका समाधान करने के गंभीर प्रयास किए हैं।

एक विश्वविद्यालय समाज का आदर्श होना चाहिए उसकी शक्ति बनना चाहिए। समाज और सरकार को साथ मिलकर हमें विश्वविद्यालय के विकास एवं उसकी समृद्धि के लिये नये दृष्टिकोण से विचार करना चाहिए और व्यावहारिक स्तर पर ठोस कदम उठाकर विश्वविद्यालय की समस्याओं का समाधान खोजने की कोशिश करनी चाहिए। मैं आप सबसे यह अपील भी करता हूँ कि हम एक विश्वविद्यालय परिवार के सदस्य के रूप में अपने कर्त्तव्य को पहचानें और तन-मन से समर्पित होकर इसके चहुँमुखी विकास के लिए अपने प्रयास समर्पित करें। हम सभी के सच्चे और समर्पित प्रयासों से ही हमारा विश्वविद्यालय आगे बढ़ेगा और समृद्ध होगा।

संसार में ज्ञान से बढ़कर श्रेष्ठ कुछ भी नहीं हैं। व्यक्तित्व विकास का प्रमुख आधार ज्ञान है। इससे छात्रों के वास्तविक व्यक्तित्व का निर्माण होता है। ज्ञान से ही देश का विकास होता है, समाज का विकास होता है एवं पारिवारिक जीवन सुखमय बनता हैं। मेरे संकल्प के साथ आप भी संकल्पबद्ध होकर विश्वविद्यालय में शिक्षा एवं शोध के वातावरण को निर्मित करने तथा उसकी अभिवृद्धि में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँ, ताकि विश्वविद्यालय का बहुमुखी विकास एवं प्रगति संभव हो सके।

इतनी सी बात हवाओं को बताये रखना,
रोशनी होगी चिरागों को जलाये रखना,
लहू देकर की है जिसकी हिफाजत हमने,
ऐसे तिरंगे को हमेशा अपने दिल में बसाए रखना।

देश भक्ति एवं राष्ट्र निर्माण विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित

सायंकालीन अध्ययन संस्थान के आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ एवं भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की स्वायत्तशासी संस्थान के नेहरु युवा केन्द्र, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में आजादी का अमृत महोत्सव के अन्तर्गत देश भक्ति एवं राष्ट्र निर्माण की थीम ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास'' पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के समन्वयक डॉ. जनक सिंह मीणा ने बताया कि इस प्रतियोगिता में कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं विधि संकाय के साथ कमला नेहरू कॉलेज एवं सायंकालीन अध्ययन संस्थान के विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

इस प्रतियोगिता में बी.ए. तृतीय वर्ष के महेन्द्र सिंह राठौड़ ने प्रथम, राखी बोरावा ने द्वितीय एवं नवदीप सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सायंकालीन अध्ययन संस्थान के निदेशक प्रो. के.ए. गोयल ने अपने उद्बोधन में कहा कि विद्यार्थी को पूरे मनोयोग से काम करना चाहिए तथा सुधार के प्रयास होने चाहिए तभी देश का विकास होगा और यही सफलता का मूल मंत्र है। डॉ. सुनीता पंवार, डॉ. बबली राम, डॉ. वाजिद ने निर्णायक की भूमिका निभायी तथा कानसिंह ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

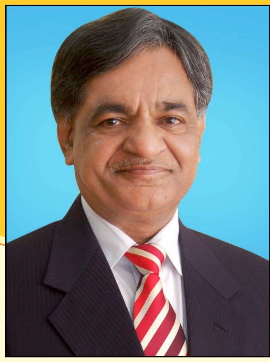

कुलपति की कलम से

वैश्विक महामारी के विकट काल में अनेक प्रकार के संघर्षों को पार कर हमारा विश्वविद्यालय निरन्तर उत्कर्ष के मार्ग पर अग्रसर है। चिरकाल से विश्वविद्यालय के शैक्षणिक विभाग में पदोन्नतियाँ अवरुद्ध सी थीं। हमारे शिक्षकों को पदोन्नति प्रदान कर हमने उनके अभ्युदय से विश्वविद्यालय के अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त किया है। सह-शैक्षणिक तथा अशैक्षणिक साथियों की भी पदोन्नति से सर्वत्र प्रसन्नता का प्रसार हुआ है। शिक्षक-मंत्रालयिक कर्मचारी तथा छात्र-समुदाय की त्रिपुटी का समुदाय ही विश्वविद्यालय है। तीनों स्तरों पर उत्कर्ष स्थापित करने का उपक्रम अनवरत प्रवर्तमान है। हमारे शिक्षक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी प्रस्तुति कर रहे हैं। हमें उन पर गर्व है। परीक्षाओं को यथोचित समय पर संचालित कर छात्रों के भविष्य को सुरक्षित किया गया। अनेक शैक्षणिक आयोजनों से विश्वविद्यालय समृद्ध हुआ है। आदिवासी अध्ययन केन्द्र की स्थापना से हमने सर्ववर्ग-सद्भाव के ध्येय को प्रसारित किया है।

राष्ट्रीय सेवा योजना, एन.सी.सी., रोवर्स स्काउट्स आदि योजनाओं से छात्रों ने समाज के साथ साक्षात्, संवाद स्थापित किया है। शिक्षा हमें संकुचित आवरणों से निकालकर विस्तार की ओर प्रवृत्त करती है। विश्वविद्यालय अतिथिगृह को पुनः सुसज्जित कर लोकार्पित किया गया। अनेक महत्त्वपूर्ण एमओयू द्वारा संस्थानों के संसाधनों का आदान-प्रदान होगा तथा हमारे छात्रों के दृष्टिकोण में विस्तार होगा, यही सर्वाधिक अपेक्षित है। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान-मात्र नहीं है अपितु ज्ञान के अनुरूप आचरण कर उत्तम चरित्र-निर्माण ही शिक्षा का उद्देश्य है। इसी लक्ष्य की ओर हमारा विश्वविद्यालय अग्रसर है। संस्थान सहयोग तथा सकारात्मक अभिरुचि से ही उच्चतर तथा उच्चतम स्तरों को प्राप्त कर सकते हैं। इसी अभिप्रेरणा की हम अपेक्षा करते हैंः-

ऊँ सहनाववतु। सह नौ भुनक्तु।
सहवीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु।
मा विद्विषावहै। ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

-(कठोपनिषद्, शान्तिपाठ)

वह परमात्मा हम दोनों (आचार्य और शिष्य) की एक साथ रक्षा करें। हम दोनों का साथ-साथ पोषण करें। हम दोनों साथ मिलकर महान् ऊर्जा के साथ कार्य करें। हमारा स्वाध्याय तेजस्वी हो। हम परस्पर विद्वेष अथवा ईर्ष्या न करें। त्रिविध ताप की शान्ति हो।

प्रो. प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी
कुलपति
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर

सम्पादक की कलम से

प्रिय साथियों,

विश्वविद्यालय वाड्.मय रूपी अमृत रस का प्रसार एवं प्रचार करने के साधन अथवा प्रतिष्ठित केन्द्र हैं। भारतीय संस्कृति में आश्रमचतुष्टय के अन्तर्गत ब्रह्मचर्य आश्रम में ज्ञान तथा आचरण की पवित्रता ही सर्वप्रमुख है। ज्ञान के मन्दिर में आचार्यों के सानिध्य में छात्र का जो संस्कार किया जाता है, उपाधि उसका भौतिक रूप है। सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः......... इस प्रकार के उपनिषद्-वचन आज भी हमारा मार्गदर्शन करते हैं। निरुक्तकार यास्क ने आचार्य का निर्वचन करते हुए कहाः-

आचारं ग्राहयति। आचिनोति अर्थान्। आचिनोति बुद्धिम्।

जो आचार का स्वयं पालन कर उसे सुयोग्य शिष्यों में संक्रान्त करे, वह आचार्य कहलाता है। जो अर्थ अर्थात् पुरुषार्थ चतुष्टय को धारण करवाता है तथा जो बुद्धि को कुशाग्र करता है, वही आचार्य कहलाने योग्य है। ऐसे आचार्य ही विश्वविद्यालय की ज्ञान-परम्परा को अग्रेसारित करते हैं। परिसर के प्रस्तुत अंक में आचार्यों की उपलब्धियाँ, शैक्षणिक सम्वाद, सामाजिक सम्बद्धता के कार्यक्रमों का विवरण, छात्रों का सर्वांगीण विकास तथा व्यक्तित्व निर्माण प्रक्रिया के सोपानों का क्रमबद्ध उल्लेख प्रस्तुत है।

परिसर विश्वविद्यालय की ज्ञानरूपी दीपशिखा है। यह निबिड तम को भेदता हुआ अनवरत अनुपम ज्योति-पुंज के रूप में समर्पित है। परिसर विश्वविद्यालय की जिजीविषा का जीवन्त प्रमाण है। समकालीन संस्कृत साहित्य के अग्रगण्य कविवर **प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी** की कविता का यह अंश हमारे आशावाद को रेखांकित करता हैः-

अथवा नैव विनंक्ष्येऽहं परित्यक्तो जनैरपि,
भूतले मूलमस्त्येव निखातं सुदृढं मम।
नवपल्लवसम्भारान् पुष्पराशीन् समन्ततः,
इन्द्रनीलमणेराभां रचयिष्यामि वा पुनः।।

जीवनवृक्ष, सन्धानम्, पृ 10-11

अथवा मरूँगा नहीं मैं, मेरी जड़ें अभी गड़ी हैं बहुत गहरी, धरती के भीतर, जहाँ पानी है, मैं फिर खींच लूँगा रस, फिर रच लूँगा नए पत्ते, फिर लहका दूँगा देह पर फूल, नीलम की आभाएँ, फिर रच लूँगा मैं।

प्रो. सरोज कौशल
सम्पादक, परिसर
निदेशक, पं. मधुसूदन ओझा शोध प्रकोष्ठ
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

दीक्षान्त समारोह

विश्वविद्यालय का अठारहवाँ दीक्षान्त समारोह भव्यता से सम्पन्न

- लता मंगेशकर को डी.लिट् तथा डॉ. स्वामीनाथन को डी.एससी. की मानद उपाधि।
- 78 स्वर्णपदक प्रदान किए गए। 73 को विश्वविद्यालय स्वर्णपदक, 1 को कुलाधिपति पदक, 4 को दानदाता स्वर्णपदक।
- 44,484 यूजी व पीजी छात्रों को प्रदान की गई उपाधियाँ।
- विश्वविद्यालय-पत्रिका परिस्पन्द का लोकार्पण।
- संविधान पार्क का शिलान्यास।

विश्वविद्यालय का 18वाँ दीक्षान्त समारोह इंजीनियरिंग कॉलेज के ऑडिटोरियम में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र ने कहा कि इस पुनीत अवसर पर मैं सर्वप्रथम डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् को नमन करता हूँ। महान् दार्शनिक, शिक्षाविद् एवं राजनीति के आलोक पुरुष डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के कर-कमलों द्वारा ही इस विश्वविद्यालय की 14 जुलाई 1962 को स्थापना हुई। शिक्षा और मौलिक चिंतन के क्षेत्र में उनका जो योगदान है, वह अविस्मरणीय है।

आज इस दीक्षांत समारोह में उपस्थित आचार्यों से मैं यह बात विशेष रूप से साझा करना चाहता हूँ कि 1921 में, जब वे मैसूर विश्वविद्यालय से मैसूर रेलवे स्टेशन जा रहे थे, तो उनके छात्रों ने उन्हें वहाँ तक ले जाने के लिए फूलों से सजी गाड़ी की व्यवस्था की और छात्रों ने स्वयं इसे खींचा था। यह उनका नहीं उनके ज्ञान और शिष्यों को बगैर किसी आग्रह-पूर्वाग्रह दिए गए ज्ञान का सम्मान था। दीक्षान्त के इस अवसर पर मैं विश्वविद्यालय के आचार्यों का आह्वान करता हूँ कि वे भी ऐसे ही आचार्य बनने का प्रयास करें कि विद्यार्थी सदा उनके प्रति वैसा ही सम्मान भाव बनाए रखें।

मुझे बताया गया है कि यह विश्वविद्यालय आगामी जुलाई माह में साठ वर्ष की अपनी शैक्षणिक यात्रा पूरी कर रहा है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। किसी भी संस्थान की पहचान वहाँ की इमारतों और उपलब्ध सुविधाओं से नहीं होती, उसकी पहचान वहाँ प्रदत्त की जाने वाली शिक्षा से होती है। इस विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी आज विभिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य करते हुए राष्ट्र और समाज को अपनी ओर से कुछ दे रहे हैं। यही शिक्षा की सबसे बड़ी सार्थकता है। मैं विश्वविद्यालय की 60 सालों की लम्बी यात्रा के दौरान विश्वविद्यालय के विकास में भागीदारी निभाने वाले सभी आचार्यों, प्रशासकों और यहाँ के कार्मिकों को साधुवाद देते हुए इस दीक्षांत समारोह में उनका अभिनंदन करता हूँ।

दीक्षांत का अर्थ होता है, ज्ञान से विद्यार्थी को संस्कारित करने की पूर्णता। गौतम बुद्ध अपने शिष्यों को दीक्षा देते समय कहा करते थे, 'अप्पदीपो भव' अर्थात् अपने दीपक स्वयं बनें। अंधकार में दूर जलता हुआ छोटा सा दीपक भी यात्रियों को सही मार्ग बता देता है। आचार्य ज्ञान के दीपक से विद्यार्थी को आलोकित करते हैं। उस आलोक से ही विद्यार्थी जीवन भर अपने साथ-साथ दूसरों को भी सही राह दिखा सकता है। शिक्षा का असली उद्देश्य भी यही है।

दीक्षांत समारोह के इस अवसर पर मैं सभी उपाधि और पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का आह्वान करता हूँ कि आप अपने सीखे गए ज्ञान को समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए समर्पित करें। यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि शिक्षा ही वह परम स्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पथ प्रदर्शन का कार्य करती है।

शिक्षा संज्ञान कराती है। संज्ञान अर्थात् सम्यक् ज्ञान। ऐसा ज्ञान जो बराबर जीवन के यथार्थ से हमें परिचय कराए। विज्ञान बहिर्मुखी है तो संज्ञान अन्तर्मुखी। विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के प्रकाश पुंज हैं। मैं चाहता हूँ, हमारे विश्वविद्यालय उत्कृष्ट और सर्वोच्च ज्ञान के केन्द्र बनें। ऐसा कोई क्षेत्र शेष नहीं होना चाहिए, जिसका ज्ञान विश्वविद्यालयों में नहीं मिले।

कथा है, महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया था। राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र में भगवान श्री कृष्ण की भेंट उत्तंक मुनि से होती है। कृष्ण उन्हें महायुद्ध और कौरवों के विनाश की बातें बताते हैं। उत्तंक क्रुद्ध होकर कृष्ण को कहते हैं, इतने समर्थ होने पर भी आपने युद्ध को नहीं रोका। वह उन्हें शाप देने को ही होते हैं कि श्री कृष्ण उन्हें अपना विराट् स्वरूप दिखाते हैं और कहते हैं, 'आपने गुरु की बहुत सेवा की है। इससे मैं आप पर प्रसन्न हूँ। मुनि आपका शाप तो मेरा कुछ बिगाड़ नहीं पाएगा पर आपका दीर्घकाल का तप बेकार हो जाएगा।' मुनि को कृष्ण की महिमा का बोध होता है और वे श्री कृष्ण से वरदान मांगते हैं कि रेगिस्तान में आवश्यकता पड़ने पर जल मिल जाए। भगवान् श्री कृष्ण तथास्तु कहते हुए विदा हो जाते हैं।

कथा आगे भी है पर उसमें जाने की जरूरत नहीं है। महत्त्वपूर्ण यह है कि कृष्ण इसलिए भगवान हैं कि वह शाप देने वाले से भी क्रोधित नहीं होते, बल्कि उन्हें इस बात की चिन्ता है कि मुनि का तप बेकार नहीं चला जाए। हमारे जो पुराण और प्राचीन शास्त्र हैं उनमें ऐसे बहुत से कथा रूपक हैं। जीवन की असली शिक्षा यही है हमें जो ज्ञान दिया जा रहा है, उससे हम ग्रहण क्या करते हैं। समाज की उन्नति अथवा अवनति शिक्षा पर ही निर्भर करती है। जिस समाज में जैसी शिक्षा व्यवस्था होगी वह समाज वैसा ही बन जाता है। इसलिए मैं चाहता हूँ, हमारे विश्वविद्यालय ऐसी शिक्षा के केन्द्र बनें जहाँ जीवन व्यवहार की शिक्षा मिले।

देश में जो नई शिक्षा नीति बनी है, वह प्राचीन भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों से जुड़ी हुई है। इसमें पुस्तकीय ज्ञान के साथ ही विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में व्यावसायिक, जीवन कौशल शिक्षा के व्यावहारिक पाठ्यक्रमों से दीक्षित किए जाने पर जोर है। भारतीय संस्कृति के उदात्त जीवन मूल्यों से

जुड़ी ऐसी शिक्षा की ही आज अधिक जरूरत है जिसमें व्यक्ति मनुष्य मनुष्य में भेद नहीं करें।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने शिक्षा को व्यक्ति निर्मात्री एवं समाज संचालिका की संज्ञा दी है। सोचिए, कितनी महत्त्वपूर्ण बात उन्होंने शिक्षा को लेकर यह की है। मैं भी यह मानता हूँ कि शिक्षा समाज के रूपान्तरण का बहुत बड़ा माध्यम है।

स्वामी विवेकानंद ने कभी कहा था कि असली शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की शक्तियों का विकास हो। शिक्षा शब्दों को रटना मात्र नहीं है। यह व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का ऐसा विकास है, जिससे वह आजादी से कुछ तय सके। मेरा भी यही मानना है कि रटन्त विद्या व्यक्ति को जीवन में आगे नहीं बढ़ा सकती। शिक्षा वही उपयोगी है जिससे व्यक्ति स्थितियों-परिस्थितियों को पहचानते हुए भले-बुरे की पहचान कर सके। वही विद्या उपादेयी है जो अपने लिए ही नहीं संपूर्ण समाज के हित के लिए कार्य करने के लिए हमें प्रेरित कर सके।

सूचना एवं तकनीक ने जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। कोविड के इस दौर में संचार प्रौद्योगिकी बेहद कारगर भी रही है। मैं शिक्षकों का आह्वान करता हूँ कि वे नई शिक्षा नीति के आलोक में पाठ्यक्रमों को अद्यतन करें। पाठ्यक्रम ऐसे हों जो न केवल उपाधि प्रदान कर औपचारिकता पूर्ण करने वाले हों अपितु उनमें भारतीय ज्ञान व संस्कृति का समावेश भी हो ताकि शिक्षा प्राप्ति के बाद हम मानवता के कल्याण के लिए काम कर सकें।

युवा भारत का भविष्य है। इसलिए हमारा उत्तरदायित्व है कि उन्हें परम्परागत शिक्षा के साथ-साथ रोजगारपरक शिक्षा मिले। मैं चाहता हूँ, व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास के लिए विश्वविद्यालयों में प्रभावी कार्य हों। ताकि शिक्षा प्राप्त करने के बाद युवा अधिकाधिक आत्मनिर्भर बन सकें। विद्यार्थियों में आरम्भ से ही स्वावलम्बन की भावना विकसित करना जरूरी है। नवाचार अपनाने के साथ राजस्थान कौशल विकास विश्वविद्यालय से जुड़कर भी इस सबंध में व्यावहारिक पाठ्यक्रम तैयार किए जा सकते हैं।

वैश्वीकरण का यह दौर विशेषज्ञता का है। ऐसे समय में यह भी जरूरी है कि विद्यार्थी भविष्य की चुनौतियों को ध्यान में रखकर विज्ञान, अभियान्त्रिकी, कला, साहित्य, संस्कृति, मीडिया एवं तकनीकी विषयों में विशेष ज्ञान प्राप्त करे। मुझे बहुत बार यह अनुभव होता है कि आने वाले समय में हरेक क्षेत्र में वही अपना स्थान बनाकर रख पाएगा जो किसी विषय विशेष में निष्णात है। इसलिए विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ सभी तरह के विषयों, विशेष ज्ञान में दक्ष करने के लिए भी अधिकाधिक प्रयास हों। 34 वर्षों के बाद लागू नई शिक्षा नीति में मूल्य आधारित शिक्षा के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, योग, दर्शन, स्थानीय भाषाओं व व्यक्तित्व निर्माण पर अत्यधिक बल दिया गया है। समय-समय पर राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों से संवाद कर राजस्थान में व्यावहारिक रूप में इसे आगामी सत्र से लागू करने के चरणबद्ध प्रयासों की ओर हम कदम बढ़ा चुके हैं। मैं चाहता हूँ, इस नीति के

आलोक में ऐसे पाठ्यक्रम हमारे विश्वविद्यालय बनायें जिनसे दूसरे राज्यों के विश्वविद्यालय भी प्रेरित होकर अपनाएं।

मुझे यह जानकर सुखद लग रहा है कि आपके विश्वविद्यालय ने मोगड़ा कलां गाँव को आदर्श गाँव बनाने के लिए गोद लेकर सृजनात्मक महत्त्व के कई कार्य किए हैं। मुझे बताया गया है कि सालावास गाँव को भी विश्वविद्यालय द्वारा आदर्श गाँव बनाने का निश्चय करते हुए यहाँ के विद्यालय में इक्कीस लाख रुपये की लागत से एक क्लास रूम बनाया गया है। मैं इसकी सराहना करता हूँ। चाहता हूँ, 'बैक टू स्कूल' कार्यक्रम, भामाशाहों के सहयोग से निःशुल्क ऑनलाईन कक्षाएं आदि आपके कार्य भविष्य में भी जारी रहे।

इस अंचल में आई.आई.टी, एम्स व भारत सरकार के अनेक कृषि, विधि, तकनीक एवं औषधीय क्षेत्र के अनुसंधान केन्द्र संचालित हैं। इन संस्थानों एवं केन्द्रों का सहयोग लेकर इस मरुस्थलीय अंचल को उपजाऊ, उर्वरायुक्त एवं हरा-भरा बनाने की आवश्यकता है। मुझे यह जानकर अच्छा लग रहा है कि आज हमारे साथ आभासी मंच से पद्मभूषण से सम्मानित श्री डी. आर. मेहता का दीक्षान्त उद्बोधन हुआ है। इनके विचारों से युवा प्रेरणा ग्रहण करेंगे और अपने बेहतर कल का निर्माण करेंगे, ऐसा विश्वास है।

यह सुखद है कि आज भारत कोकिला लता मंगेशकर को विश्वविद्यालय द्वारा मानद सम्मान दिया गया है। लताजी हमारे देश की शान हैं, उन्हें सम्मानित कर हम स्वयं अपने आपको सम्मानित महसूस कर रहे हैं। मैं लता जी के स्वस्थ और दीर्घ जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। आपके सुर ईश्वर की प्रार्थना हैं।

संविधान हमारे देश का आदर्श है। संविधान ने हमें मौलिक अधिकार दिये हैं तो इसमें कर्तव्य भी निहित हैं। मुझे कई बार दुख होता है कि हमारे यहाँ मौलिक अधिकारों की तो बात होती है परन्तु कर्त्तव्यों से हम प्रायः विमुख होते हैं। मैं चाहता हूँ, अधिकारों के साथ कर्तव्य के लिए भी प्रत्येक भारतवासी तैयार रहे। आप लोग युवा हैं। राष्ट्र निर्माण में आपको महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसलिए संविधान में प्रदत्त कर्त्तव्यों को आप अपने आचरण में लाकर आगे बढ़ें। नई पीढ़ी संविधान के बारे में जागरूक हो, इसी उद्देश्य से राज्य के हर विश्वविद्यालय में ''संविधान पार्क'' की स्थापना का मेरा सपना है। मुझे प्रसन्नता है कि बहुत से विश्वविद्यालयों में इस पर तेजी से कार्य हो रहा है। आज इस विश्वविद्यालय के संविधान पार्क का भी शिलान्यास किया गया है। इसके लिए सभी को बहुत बधाई और शुभकामनाएं। आपका यह संविधान पार्क देशभर में अपनी उत्कृष्टता का उदाहरण बने।

विश्वविद्यालय ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले आलोक गृह हैं। विश्वविद्यालय के आचार्य इस आलोक के संवाहक होते हैं। आचार्य का अर्थ ही है, जो अपने आचरण से आदर्श की स्थापना करे। हमारे यहाँ कहा गया है-

'शास्त्रप्रयोजनम् तत्त्वदर्शनम्'

अर्थात् ज्ञान का उद्देश्य सत्य को जानना है। आचार्य विविध विषयों के ज्ञान के सत्य को अपने विद्यार्थियों में संप्रेषित करें, तभी उसकी सार्थकता है।

मैं इस दीक्षांत समारोह में जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के आचार्यों से आग्रह करता

हूँ कि वे श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त छात्र ही तैयार नहीं करें बल्कि ऐसे भावी नागरिक भी समाज को दें जो अपने ज्ञान का उपयोग देश की समृद्धि और संपन्नता के लिए करने को तत्पर हों।

मैं पुनः मानद उपाधि से अलंकृत समाज की दोनों महान विभूतियों और उपाधि व स्वर्ण पदक प्राप्तकर्ता विद्यार्थियों, शोधार्थियों और उनके अभिभावकों को इस अवसर पर बधाई देता हूँ।

मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि समय के साथ-साथ शिक्षा का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। जोधपुर शिक्षा के एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र के रूप में उभर रहा है। महनीय कुलपतियों की श्रृंखला में मुख्यमंत्री ने प्रो. वी.वी. जॉन की शैक्षणिक दूरदर्शिता को रेखांकित किया। विश्वविद्यालय केवल नियुक्तियों के ही साधन नहीं हैं अपितु मानव संसाधन की उत्कृष्टता के साधक हैं। शिक्षा ने राजस्थान को पिछड़े राज्य से निकालकर अग्रगण्य बना दिया है।

दीक्षान्त उद्बोधन 'पद्म भूषण' प्रख्यात अर्थशास्त्री डी.आर. मेहता ने प्रदान किया। विद्यार्थियों का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् छात्र अपनी शिक्षा तथा उपाधि के सकारात्मक प्रभाव का विस्तार करें। आत्मसम्मान को अपनी पूँजी बनायें। भाषा में माधुर्य को अपनायें। जीवन के लक्ष्य का निर्धारण करें। समाज-सेवा ही जीवन का सबसे बड़ा ध्येय होना चाहिए। अनेक घटनाओं के माध्यम से मेहता ने उपाधि तथा व्यावहारिक जीवन में उत्कर्ष की ओर अग्रसर होने की अभिप्रेरणा प्रदान की।

विशिष्ट अतिथि श्री राजेन्द्र सिंह यादव राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने कहा कि राज्य सरकार ने एम.बी.एम. इंजीनियरिंग कॉलेज को विश्वविद्यालय बनाया है। देश के नवनिर्माण में छात्रों की युवा शक्ति नई योजनाओं को बनाकर कार्य करे। समस्त छात्र अपनी उपाधि की सार्थकता को सिद्ध करें।

परिस्पन्द का हुआ लोकार्पण

विश्वविद्यालय की पत्रिका 'परिस्पन्द' का कुलाधिपति तथा मुख्यमंत्री के द्वारा लोकार्पण किया गया। परिस्पन्द का प्रकाशन विश्वविद्यालय की स्थापना के 60 वर्ष के उपलक्ष्य में किया गया। इस पत्रिका में विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अद्यावधिपर्यन्त विकास को रेखांकित किया गया है।

संविधान पार्क का हुआ शिलान्यास

संविधान की जानकारी सभी को प्रदान करना हमारा कर्त्तव्य है। यह संविधान पार्क देश भर में अपने महत्त्व को दर्शाता है। यह विचार व्यक्त करते हुए कुलाधिपति ने संविधान पार्क का वर्चुअल शिलान्यास किया।

संक्षिप्त वृत्तचित्र से विश्वविद्यालय का गौरवपूर्ण परिचय प्रस्तुत किया गया। कुलपति प्रो. पी.सी. त्रिवेदी ने व्याख्यान देते हुए कहा- पश्चिम राजस्थान के अभूतपूर्व एवं गौरवशाली उच्च शिक्षण संस्थान जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के 60 वें वर्ष में प्रवेश करने की अनुपम अनुभूति के साथ मैं 18वें दीक्षान्त समारोह में कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में उपस्थित राजस्थान राज्य के माननीय राज्यपाल एवं इस विश्वविद्यालय के आदरणीय कुलाधिपति महोदय श्रीमान् कलराज मिश्र जी साहब का हार्दिक अभिनन्दन एवं भावपूर्ण स्वागत करता हूँ। वैश्विक महामारी के विकट समय एवं अनेकानेक आवश्यक कार्यो के होने के पर भी आपने वर्चुअल मोड पर इस कार्यक्रम से जुड़कर हमें गौरवान्वित किया है। आपके मार्गदर्शन एवं सकारात्मक प्रयास से ही विश्वविद्यालय दीक्षांत समारोह को उत्सव पूर्वक मनाने के लिए अग्रसर हुआ है। आप की उपस्थिति इस विश्वविद्यालय हेतु आशीर्वाद एवं ऊर्जा का भंडार बन शिक्षण संस्थान को चौगुनी गति से क्रियाशील होने के लिए अभिप्रेरित कर रही है। आदरणीय महोदय, संविधान के प्रति आपकी प्रगाढ़ आस्था के परिणामस्वरूप ही राजस्थान के प्रत्येक विश्वविद्यालय में संविधान के प्रति जागरूकता की अलख जगी है और इसी प्रेरणा के फलस्वरूप प्रत्येक विश्वविद्यालय अपने परिसर में संविधान पार्क बना रहा है जो कि अपने आप में एक अनूठा उदाहरण है। मैं पूरे आदर एवं हृदय की शुद्ध भावनाओं के साथ जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर परिवार की ओर से आपका स्वागत एवं वंदन करता हूँ।

राजस्थान के लोकप्रिय एवं जन-जन के हितैषी मुख्यमंत्री माननीय अशोक गहलोत साहब विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आभासी मंच को सुशोभित कर रहे हैं। आपकी चमत्कारिक वर्चुअल उपस्थिति और ऊर्जावान स्फूर्ति सभागार में अद्‌भुत जादू बिखेर रही है। आपके नजरिए में शिक्षा व्यक्ति में प्राण तत्व का कार्य करती है और इसी प्राण तत्त्व के सक्रिय बढ़ावे हेतु आप प्राथमिक शिक्षा से लगाकर उच्च शिक्षा तक सकारात्मक एवं त्वरित सुधारों को सर्व प्रमुख प्राथमिकता प्रदान करते हैं 'इसी सोच को अमलीजामा पहनाते हुए आपके ही सद्‌प्रयासों से जोधपुर एक विशाल एजुकेशन हब बन रहा है। आईआईटी हो या डिजिटल विश्वविद्यालय या फिर एमबीएम को विश्वविद्यालय का दर्जा देना, ये समस्त उदाहरण आप द्वारा जोधपुर को प्रदत्त उपहार हैं जिनके लिए आने वाली पीढ़ियाँ आपकी ऋणी रहेंगी।

मैं दीक्षांत समारोह के अवसर पर आपका हार्दिक आभार प्रकट करने के साथ विनम्रता पूर्वक निवेदन करता हूँ कि विश्वविद्यालय के संवर्धन उत्कर्ष एवं उन्नयन हेतु आपका

स्नेहिल आशीर्वाद सदैव बना रहेगा।

समारोह के प्रमुख केन्द्र एवं आकर्षण और इस भव्य समारोह में दीक्षांत व्याख्यान के उद्बोधनकर्ता पद्मभूषण से अलंकृत विद्वान् आदरणीय श्री डी.आर. मेहता हैं। इस विश्वविद्यालय के लिए बड़े गौरव की बात है कि अपनी प्रशासकीय नीतियों की वजह से राज्य एवं केंद्र में कई महत्त्वपूर्ण पदों पर सेवाएं देने वाले सेबी के पूर्व चेयरमेन पद्मभूषण से सम्मानित श्री डी.आर. मेहता साहब जैसी विलक्षण शख्सियत दीक्षांत उद्बोधन प्रदान कर रही है। आपने राज्य व राष्ट्र की सेवा के साथ-साथ मानव सेवा का भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति द्वारा अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। आप जैसी हस्ती हमसे जुड़कर हम सब का उत्साह वर्धन करते हुए हमारा मार्गदर्शन करेगी ऐसी शुभकामना हम सब करते हैं। दीक्षांत समारोह के पावन अवसर पर मेहता साहब का मैं पलक पाँवड़े बिछाकर स्वागत करता हूँ।

राजस्थान की धरा पर जिस गति से शिक्षा एवं शोध का प्रवाह हुआ है उसके पीछे राजस्थान के शिक्षा मंत्री की सशक्त प्रशासकीय एवं योजनाबद्ध नीति व कार्यप्रणाली है। दीक्षांत समारोह के विशिष्ट अतिथि राजस्थान सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री माननीय श्री राजेन्द्र सिंह यादव जी का भी मैं इस अवसर पर स्वागत करता हूँ।

विश्वविद्यालय की सीनेट ने दूरदृष्टि एवं रचनात्मकता के अविरल प्रवाह हेतु इस बार के दीक्षांत समारोह में स्वर साम्राज्ञी आदरणीया लता मंगेशकर जी एवं हरित क्रान्ति के जनक श्री एम.एस. स्वामीनाथन जी को मानद उपाधि प्रदान करने का सुखद निर्णय लिया है। यह इस विश्वविद्यालय के इतिहास में दूसरी बार है जब हम मानद उपाधि प्रदान करने का सुअवसर प्राप्त कर पाए हैं।

मैं आदरणीय स्वरसाम्राज्ञी लता जी और सम्माननीय स्वामीनाथन जी का हार्दिक स्वागत करते हुए अत्यंत गौरव का अनुभव कर रहा हूँ। हमारे अनुरोध को स्वीकार करने से हमारे विश्वविद्यालय का सम्मान बढ़ा है।

विभिन्न संकायों के अधिष्ठातागण, निदेशकगण, सिंडिकेट व सीनेट के माननीय सदस्यगण, कुलसचिव, वित्त नियंत्रक, विभागाध्यक्ष, सभी सम्मानित शिक्षकगण, कर्मचारीगण, मीडियाकर्मी, स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले प्रिय विद्यार्थियों, उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों तथा इस दीक्षांत समारोह में प्रत्यक्ष व आभासी मंच से उपस्थित सभी महानुभावों का इस अवसर पर हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूँ।

विश्वविद्यालय का हृदय तो उसका विद्यार्थी वृंद है क्योंकि विद्यार्थियों की कक्षा से इतर गतिविधियों में सक्रिय हिस्सेदारी से ही विश्वविद्यालय स्पंदित होता है जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका अदा करता है हालांकि पिछला कुछ समय वैश्विक महामारी के काले बादलों के कारण पूरे विश्व के लिए बेहद ही चुनौतीपूर्ण रहा लेकिन कर्मठ निष्ठावान एवं ईमानदार कर्मचारियों के साथ-साथ ज्ञानवान व उत्साहित शिक्षकगणों के अपूर्व

कौशल एवं सहयोग के कारण हमने विश्वविद्यालय की समस्त गतिविधियों को निर्बाध रूप से जारी रखा है एवं जीवंतता को बरकरार रखा है। माननीय कुलाधिपति महोदय जी मैं इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विगत सत्र की कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहूँगा।

विश्वविद्यालय ने अपने सभी कार्य कोविड-19 महामारी काल में राज्य सरकार की ओर से जारी दिशा निर्देशों के अनुसार सम्पादित किए हैं इसमें परीक्षाओं का आयोजन एवं नये सत्र में प्रवेश तक सम्मिलित है। हमारा विश्वविद्यालय कोरोना काल में भी शिक्षा की निरंतरता और ज्ञान की वृद्धि हेतु लगभग 250 से अधिक राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय वेबीनार आयोजित कर चुका है।

विश्वविद्यालय में लंबित सीएएस प्रक्रिया गत वर्ष फरवरी, मार्च में पूर्ण की एवं इस सत्र में भी इसे आगे बढ़ाते हुए समस्त शिक्षकों की सीएएस प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है।

विश्वविद्यालय में एक पेटेंट सेल का भी गठन हुआ है। शोध के नए आयाम हेतु रिसर्च डायरेक्टर की पोस्ट सृजित कर रिसर्च सेल को प्रभावी बनाया गया है।

महोदय, नाट्य एवं रंगमंच से जुड़ी विधाओं को मुखरित करने हेतु विश्वविद्यालय में थिएटर सेल का गठन किया गया है।

वाइल्डलाइफ रिसर्च और कंजर्वेशन सेंटर की स्थापना की गई तथा इसमें दो नये डिप्लोमा कोर्स भी प्रारम्भ किये हैं, जो अपनी गति एवं कार्यप्रणाली से अच्छा प्रभाव छोड़ रही है। इस सत्र में आदिवासी केंद्र की भी स्थापना की गई है और कई केंद्रों को पुनर्जीवित कर क्रियाशील बनाया गया है।

केंद्र द्वारा भेजी गई यूजीसी टीम ने हमारे EMMRC सेंन्टर को देश में उच्च श्रेणी का स्थान दिया है।शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में विभिन्न विभागों में 25 स्मार्ट पैनल बोर्ड लगाए गए हैं। केंद्रीय पुस्तकालय का पुनरुद्धार किया गया है एवं इंटरनेट सुविधा उपलब्ध करवाई गई है।

अपना दायरा व्यापक करते हुए विभिन्न संस्थाओं से 15 एमओयू किये गये हैं।

इंजीनियरिंग विषयों की परीक्षाएं पहली बार ऑनलाइन माध्यम से संपादित हुई। रूसा से प्राप्त 20 करोड़ की ग्रांट का पूरा उपयोग भी किया गया। इंजीनियरिंग संकाय के तीन विभागों का NBA Accrediation हुआ। कई नवनिर्माणों का भी लोकार्पण हुआ।

इस सत्र में पेट्रोलियम इंजीनियरिंग विषय का शुभारंभ किया गया है। पीएच.डी. रेगुलेशन 2016 को लागू किया एवं Pre Ph.D Exam करवाये।

विश्वविद्यालय की एनएसएस, एनसीसी. स्काउट विंग के स्वयं सेवकों ने कोविड-19 संक्रमण से बचाव हेतु रैलियों पोस्टरों के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाया। नागरिकों को मास्क व सैनिटाइजर भी बांटे।

विभिन्न संस्थाओं विभागों एवं महाविद्यालयों में वृहद स्तर पर पौधारोपण के कार्यक्रम संपादित किए गए। गोद लिए गए गाँवों मोगड़ा एवं सालावास में कई महत्त्वपूर्ण गतिविधियाँ करवाई गई हैं।

छात्र सेवा मंडल की ओर से कोविड-19

महामारी संक्रमण के चलते विभिन्न प्रतियोगिताएं विश्वविद्यालय के विभिन्न संस्थाओं में ऑनलाइन माध्यम से संपन्न करवाई गई। नई शिक्षा नीति लागू करने की तैयारियाँ पूर्ण कर ली गई है। विश्वविद्यालय का नाम विश्व स्तर पर रोशन करने वाले चार प्रोफेसरों के नाम विश्व की दो प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची में स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय, अमरीका द्वारा शामिल होने पर इन चारों आचार्यो का समारोहपूर्वक सम्मान किया गया। अशैक्षणिक कर्मचारियों की कई वर्षो से लंबित प्रमोशन प्रक्रिया पूर्ण की गई।

एनएसएस कार्यकर्ताओं के सहयोग और बैंक ऑफ बड़ौदा की सहायता से विश्वविद्यालय परिसर में लगभग 3000 पौधे लगाए गए।

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2021 को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का ऑनलाईन आयोजन हुआ जिसमें 10 से ज्यादा देशों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और तीन पुरस्कारों की घोषणा की गई जिनके नाम निम्न प्रकार हैं:-

- गुरु जम्भेश्वर पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार (श्री सुन्दरलाल बहुगुणा)।
- अमृता देवी वृक्ष मित्र पुरस्कार (डॉ. वन्दना शिवा)।
- डॉ. जैताराम विश्नोई मेमोरियल पुरस्कार (श्री जादव मोलाई पायेंग)।

हमारे विश्वविद्यालय के दो स्वयंसेवकों का 26 जनवरी, 2022 की राजपथ दिल्ली में होने वाली परेड में भी चयन हुआ। हमारे विश्वविद्यालय के परिचय, क्रियाकलापों, नवाचारों एवं उपलब्धियों को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए गौरव का अनुभव कर रहा हूँ। स्वर्ण पदक एवं उपाधि प्राप्त करने वाले समस्त विद्यार्थियों आप अपने जीवन में मानव होने के महत्त्व को समझते हुए एवं कार्य संस्कृति को लक्ष्य बनाकर उत्तरदायी एवं सर्जनशील मनुष्य बने यही मेरा आशीर्वाद है।

शिद्दत से कोशिश करो चिराग बनने की,
कौन जाने तुम्हीं से कल
रोशन सारा जहाँ हो।।

श्रीमान्! हम अपने छात्र-छात्राओं की कुशलता को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मानक के समकक्ष विकसित कर सकें, अपनी प्रचुर मानव सम्पदा को रचनात्मक क्षेत्रों के लिए तैयार कर सकें, राष्ट्र निर्माण में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कर सकें, देश के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए अपने छात्र-छात्राओं को वांछनीय कौशल से समृद्ध कर सकें, यही हमारा लक्ष्य है, यही हमारा अभीष्ट है। सभी दिशाओं से शुभ विचारों का आह्वान करते हुए हम प्रगति पथ पर अग्रसर हों।

परिन्दों ने एक उड़ान भरी है,
पंखों का इम्तिहान बाकी है,
अभी तो जीती हैं चन्द बाजियाँ,
अभी तो सारा जहाँ बाकी है।।

मैं सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करते हुए आशा करता हूँ कि आप जीवन में अच्छे और सच्चे नागरिक बनेंगे एवं अपनी प्रगति के साथ-साथ देश और समाज की समृद्धि के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। विद्यार्थी मित्रों, अंत मे मैं आपको यही संदेश देना चाहता हूँ। आपकी जीवन यात्रा शुभ हो -

शुभास्ते पन्थानः सन्तु।

छात्रों को प्रदान की गईं उपाधियाँ तथा स्वर्णपदक

अभियान्त्रिकी, कला, वाणिज्य, विधि तथा विज्ञान संकाय के अधिष्ठाताओं ने अपने संकायों की डी.लिट्., डी.एससी., स्नातकोत्तर, स्नातक आदि उपाधियों के लिए कुलाधिपति के समक्ष निवेदन प्रस्तुत किया। कुलाधिपति महोदय ने सभी विद्यार्थियों की उपाधियों और स्वर्णपदक का अनुमोदन किया। 44484 यूजी व पीजी छात्रों को उपाधियाँ प्रदान की गईं। 151 छात्रों को पी-एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई तथा एक-एक छात्र को डी.एससी. एवं डी. लिट्. की उपाधि प्रदान की गई।

स्वामीनाथन व लता मंगेशकर को दी गई मानद उपाधि

विज्ञान के क्षेत्र में एम.एस. स्वामीनाथन को डी.एससी. की मानद उपाधि प्रदान की गई। हरित क्रान्ति के अग्रदूत प्रो. स्वामीनाथन को अनेक पुरस्कारों तथा उपलब्धियों की प्राप्ति हो चुकी है।

कला क्षेत्र में सुर कोकिला लता मंगेशकर को डी.लिट्. की उपाधि प्रदान की गई। इन दोनों श्रेष्ठ व्यक्तित्वों को मानद उपाधि प्रदान करते हुए विश्वविद्यालय स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है।

कार्यक्रम की आयोजन प्रमुख प्रो. संगीता लूंकड़ ने पूरे कार्यक्रम का सफल संयोजन किया। दीक्षान्त समारोह का संचालन डॉ. राजश्री राणावत, डॉ. ललित पंवार तथा डॉ. हितेन्द्र गोयल ने किया। कुलसचिव श्रीमती गोमती शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रो. ज्ञानसिंह शेखावत बने बॉटनिकल सोसाइटी के उपाध्यक्ष

वनस्पति शास्त्र विभाग और दी इंडियन बॉटनिकल सोसाइटी के बैनर तले तीन दिनों तक चली कॉफ्रेंस में सर्वसम्मति से विवि के प्रो. ज्ञान सिंह शेखावत को सोसाइटी का उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया। बॉटनीकल सोसाइटी में उच्च पद पर आसीन होने का जेएनवीयू में यह पहला अवसर है कि कोई सोसाइटी का उपाध्यक्ष नियुक्त हुआ है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रवीण चंद्र त्रिवेदी ने इस उपलब्धि पर प्रो. ज्ञान सिंह शेखावत को बधाई दी।

मशरूम कृषिकरण तकनीकी पर कुटीर व लघु उद्योग स्थापित करने हेतु कार्यशाला

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग में कौशल विकास पाठ्यक्रम के तहत मशरूम कृषिकरण (प्रर्वधन) तकनीकी पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) के प्रधान वैज्ञानिक डॉ सुनील कुमार सिंह ने मशरूम कृषिकरण तकनीकी पर अपना उद्‌बोधन देते हुए विभिन्न स्लाइडों के माध्यम से मशरूम का जीवन चक्र) कुटीर उद्योग व लघु उद्योग लगवाने हेतु आवश्यक उकरण, प्रयोगशाला, ट्रेनिंग, श्रमिकों की आवश्यकता, व्यापारिकरण, बाजार व उद्योग से होने वाले लाभ की जानकारी प्रदान की।

डॉ. निशा टाक ने किया अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शोधपत्र वाचन

विश्वविद्यालय के वनस्पति शास्त्र विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. निशा टाक ने 14 अंतरराष्ट्रीय नाइट्रोजन फिक्सेशन कॉफ्रेंस के ऑनलाइन इवेंट जिसे कि आरहस यूनिवर्सिटी डेनमार्क की ओर से आयोजित किया गया उसमें अपने शोधपत्र का वाचन किया। डॉ. निशा ने अपना शोधपत्र जिसका शीर्षक "जीनोमिक्स इनसाइट्स इनटु प्लांट ग्रोथ प्रमोटिंग पैराबरकहोलडरीया स्पीशीज MI&NL2 आईसौलैटेड फरोम माईमुसा इनवीसा नागालैंड भारत" पर पैरलल सेशन सिम्बायोसिस में नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाली एक प्रजाति जो कि माईमुसा इनवीसा पादप की जड में पाई जाने वाली ग्रंथी से निकाली गई है पर प्रस्तुति दी। उन्होंने यह शोध DBT ट्विनिंग प्रोजेक्ट के अंतर्गत नागालैंड में पाए जाने वाले जंगली लैगयूमनस पादपों पर किया। इस शोध कार्य में MI&NL2 बैक्टीरिया की खोज की गई है और उसका जीनोम सीक्वेंस करवाया गया है।

डॉ. निशा टाक वुमन बॉटनिस्ट पुरस्कार से सम्मानित

विश्वविद्यालय में आयोजित 44 ऑल इंडिया बॉटनिकल कॉन्फ्रेंस में वुमन बॉटनेस्ट प्रतियोगिता के अन्तर्गत प्रथम राउंड में चयनित तीन कैंडिडेट्स को अपने शोध कार्य प्रस्तुत करने का मौक़ा दिया गया। इस अधिवेशन में भारत वर्ष के विभिन्न भागों से आए हुए वनस्पति शास्त्र के शिक्षक, वैज्ञानिक, शोध छात्रों के सामने खुले मंच पर एमबीएम ऑडिटोरियम में शोध पत्र वाचन व प्रश्न के उत्तर के आधार पर जेएनवीयू की असिस्टेंट प्रो. डॉ. निशा को उनके द्वारा किया गया अंतरराष्ट्रीय स्तर का शोध कार्य विशेषकर शुष्क क्षेत्रों में पाए जाने वाले नवीन नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाले जीवाणुओं की खोज एवं उसके जीनोम विश्लेषण के लिए IBC वुमन बॉटनिस्ट 2021 के पुरस्कार के लिए चयन किया गया।

प्रो. सरोज कौशल ने अखिल भारतीय कालिदास समारोह उज्जैन में दिया व्याख्यान

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के संस्कृत विभाग की वरिष्ठ प्रो. डॉ. सरोज कौशल को व्याख्यान के लिए अखिल भारतीय कालिदास समारोह, उज्जैन में आमंत्रित किया गया।

प्रो. कौशल ने सुप्रसिद्ध संस्कृत कवि एवं विद्वान् प्रो. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी की अध्यक्षता में 'महाकवि कालिदास के काव्यों में अलंकार-सौन्दर्य' विषय पर शोधपूर्ण व्याख्यान देकर यह प्रमाणित किया कि महाकवि कालिदास ने अनेक अलंकारों के प्रयोग से न केवल साहित्य में सौन्दर्य का संचार किया अपितु जीवन हेतु अनेक सूत्र प्रदान किए।

प्रो. कौशल ने महाकवि कालिदास के द्वारा प्रयुक्त उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, परिकर, स्वभावोक्ति आदि अनेक अलंकारों की उदाहरणसहित व्याख्या कर कालिदास के वैशिष्ट्य की विशद व्याख्या की। यह भी ध्यातव्य है कि प्रो. कौशल को वर्ष 2019 में कालिदास अकादमी की ओर से सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र के लिए भी पुरस्कृत किया गया था। उन्होंने अखिल भारतीय कालिदास समारोह में व्याख्यान प्रदान कर जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर का मान बढ़ाया है।

प्रो. सेंगवा विश्व के टॉप 2% वैज्ञानिकों की रैंकिंग के टॉप 1% में चुने गए

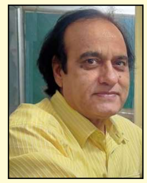

भौतिक विभाग में कार्यरत प्रोफेसर आर.जे. सेंगवा ने अपने उच्च गुणवत्ता शोध तथा उसको प्रख्यात जर्नलस् में प्रकाशन करके विश्व के टॉप 2% साइंटिस्ट्स रैंकिंग वर्ष 2021 वर्जन 3 के टॉप 1% में स्थान बनाकर जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर को विश्व पटल पर गौरवान्वित किया है। अमेरिका की स्टेनफार्ड यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों प्रो. जे.पी.ए. ईयोनिडिस व प्रो. डब्लू बोयाक तथा एल्सेवियर के डॉ. जे. बास द्वारा विश्वभर के सभी क्षेत्रों के वैज्ञानिक कार्यों का सभी सम्भावित मांपाकों के साथ क्लाउड कम्पयूटिंग से तुलनात्मक विश्लेषण कर टॉप 2% रैंकिंग 19 अक्टूबर, 2021 को डेटाबेस स्कोपस पर जारी किया है। इससे पूर्व जारी टॉप 2% सांइटिस्टस् रैंकिंग वर्ष 2019 वर्जन 1 तथा वर्ष 2020 वर्जन 2 में भी प्रो. सेंगवा ने टॉप 1% में स्थान हासिल किया। वर्ष 2021 में प्रो. सेंगवा के शोध को वर्ष 2019 के नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो. जॉन बी. गुडएनफ ने अमेरिकी जर्नल में प्रकाशित अपने शोधपत्र में साइटेशन देकर मान्यता दी है।

राजस्थानी में आलोचनात्मक शोध की महती आवश्यकता : प्रो. पी.सी. त्रिवेदी

राजस्थानी शोध पत्रिका 'शोधेसर' का लोकार्पण

राजस्थानी भाषा विश्व की महत्त्वपूर्ण भाषाओं में अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। इसका प्राचीन एवं गौरवशाली साहित्यिक इतिहास है। राजस्थानी साहित्य में आलोचनात्मक शोधकार्य को प्रकाशित करना बहुत जरूरी है, ये विचार राजस्थानी विभाग की शोध पत्रिका ''शोधेसर'' के लोकार्पण अवसर पर कुलपति त्रिवेदी ने अपने उद्‌बोधन में कही। राजस्थानी विभागाध्यक्ष एवं शोध पत्रिका की संपादक डॉ. मीनाक्षी बोराणा ने बताया कि इस अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. के.एल. रैगर ने प्रकाशित साहित्यिक शोध पत्रों की प्रशंसा की। सायंकालीन अध्ययन संस्थान के निदेशक प्रो. के.ए. गोयल ने साहित्य में समसामयिक समालोचना का महत्त्व बताया। 120 पेज की इस शोध पत्रिका में राजस्थानी साहित्य के विभिन्न विषयों पर राजस्थानी रचनाकारों एवं शोधार्थियों के कुल 16 आलोचनात्मक शोध आलेख प्रकाशित किये गए हैं।

राजस्थानी संत साहित्य लोकमार्गी साहित्य है: मालचंद तिवाड़ी

राजस्थानी विभाग की ओर से ऑनलाईन फेसबुक लाइव पेज पर गुमेज व्याख्यानमाला के अंतर्गत राजस्थानी संत साहित्य और वाणियाँ विषय पर बोलते हुए राजस्थानी भाषा के प्रसिद्ध रचनाकार मालचंद तिवाड़ी ने कहा कि राजस्थानी भाषा का सम्पूर्ण संत साहित्य बुनियादी रूप से लोकमार्गी साहित्य है। वाणियाँ विशेष रूप से मनुष्य को इस प्रश्न से अवगत करवाती हैं कि सृष्टि में व्यवहार, आचरण कैसा होना चाहिए।

राजस्थानी साहित्य की प्रेमाख्यान परम्परा विश्व की समृद्ध और बेजोड़ परम्परा : डॉ. शारदा कृष्ण

राजस्थानी भाषा-साहित्य की प्रेमाख्यान परम्परा पर प्रकाश डालते हुए राजस्थानी भाषा की रचनाकार, डॉ. शारदाकृष्ण ने कहा कि राजस्थानी प्रेमाख्यान परम्परा विश्व साहित्य की सबसे समृद्ध और बेजोड़ परम्परा है। राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी बोराणा ने बताया कि डॉ. शारदा कृष्ण ने अपने व्याख्यान में कहा कि राजस्थानी साहित्य का इतिहास बहुत ही विशाल, समृद्ध और लोक प्रचलित है। इसकी परम्परा हमें गर्व की अनुभूति करवाती है।

वर्तमान समय में गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता पर हुआ मंथन

गाँधी जयंती के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन

गाँधी अध्ययन केन्द्र में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जयंती के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य विषय वर्तमान समय में गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता था। गाँधी अध्ययन केन्द्र द्वारा आमजन में गाँधीवादी विचारों के प्रसार हेतु ब्रोशर का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. पी.सी. त्रिवेदी ने गाँधीजी के अहिंसावादी दर्शन पर अपना अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए आज के परिप्रेक्ष्य में हिंसावादी घटकों का दमन अहिंसावादी दर्शन से करने व गाँधी जी के जीवन प्रसंग को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि महात्मा गाँधी द्वारा देश आजादी के संदर्भ में किये गये कार्य हमेशा स्मरणीय रहने चाहिए व नवयुवकों को उनके दर्शन को जीवन में अपनाना चाहिए। रमेश बोराणा ने गाँधीजी के द्वारा किये गये प्रमुख आंदोलन व देश आजादी में उनके योगदान को रेखांकित किया। उपवन संरक्षक (वन्यजीव) श्री विजय बोराणा ने गाँधीवादी प्रसंग व वन्यजीव संरक्षण पर अपना उद्‌बोधन दिया।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में संकल्प बैनर पर पर सभी आगुन्तकों ने हस्ताक्षर किये। इस अवसर पर वन्यप्राणी सप्ताह के पूर्व दिवस पर वन्यजीव फोटो प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। वन्य जीव संरक्षण केन्द्र के निदेशक डॉ. हिमसिंह गहलोत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

डिंगळ काव्य राजस्थानी का प्राण है : डॉ. आईदान सिंह भाटी

राजस्थानी विभाग द्वारा ऑनलाईन फेसबुक लाइव पेज पर गुमेज व्याख्यानमाला के अन्तर्गत राजस्थानी भाषा साहित्य री ओळखांण डिंगल काव्य पर राजस्थानी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि आलोचक) साहित्यवेत्ता डॉ. आईदान सिंह जी भाटी ने कहा कि राजस्थानी भाषा के साहित्य का प्राण तत्त्व है डिंगल काव्य। उन्होंने व्याख्यानमाला में डिंगल काव्य परम्परा पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला।

राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी बोराणा ने बताया कि डॉ. आईदान सिंह भाटी ने कहा कि राजस्थानी डिंगल काव्य परम्परा से प्रभावित होकर ही उन्होंने राजस्थानी में लेखन प्रारम्भ किया था। उन्होंने अपनी एक प्रसिद्ध डिंगल कविता का पाठ किया जो कि बहुत ही सुंदर कर्णप्रिय था।

व्याख्यानमाला में साहित्यकार मधु आचार्य आशावादी, डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित, श्री श्याम सुन्दर भारती, श्री भंवरलाल सुथार, श्री श्रीकांत पारीक, विमला नागला, महेन्द्र सिंह छायण, तरूण दाधीच, नरेश कविया, सीमा राठौड़, राकेश सारण, पुरुषोत्तम, भवानी सिंह, रणजीत सिंह, इन्द्रदान चारण सहित अनेक शोध छात्र उपस्थित थे।

सालावास स्मार्ट विलेज में संवैधानिक जागरुकता प्रमाण-पत्र कोर्स का आयोजन

विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए सालावास गाँव में ग्रामीणों में संवैधानिक एवं विधिक जागरुकता के लिए आयोजित प्रमाण पत्र कोर्स का आयोजन हुआ। इस प्रमाण पत्र कोर्स में 53 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रमाण पत्र कोर्स में प्रतिभागियों को संविधान तथा विधि के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी दी गई। इसके बाद उनके लिए एक परीक्षा का आयोजन किया गया। इस परीक्षा में उत्तीर्ण प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। परीक्षा में युवराज गहलोत तथा रणवीर गहलोत ने प्रथम, रवि शंकर ने द्वितीय तथा संगीता मारू ने तृतीय स्थान अर्जित किया। नोडल अधिकारी डॉ. दिनेश गहलोत ने बताया कि समापन समारोह कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एन.आई. कोर्ट (एक) के विशेष मजिस्ट्रेट मोहन मीणा, मुख्य वक्ता राजकीय महाविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. हरी राम परिहार तथा विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त राजकीय अधिवक्ता मनोज गहलोत तथा राजस्थान उच्च न्यायालय के अधिवक्ता विवेक माथुर थे। मुख्य वक्ता डॉ. हरिराम परिहार में प्रमाण पत्र कोर्स को जागरूकता के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण प्रयास बतलाते हुए मूल कर्तव्यों पर प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि विवेक माथुर के अनुसार कानून की जानकारी का अभाव बीमारी का प्रतीक है। विशिष्ट अतिथि मनोज गहलोत के अनुसार संविधान ने राजा और रंक का भेद समाप्त कर सभी को अपनी प्रतिभा का समुचित इस्तेमाल करने का मौका दिया है। मुख्य अतिथि विशेष मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट मोहन मीणा ने कानून के व्यावहारिक पक्ष पर प्रकाश डाला। प्रारम्भ में डॉ. दिनेश गहलोत ने कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डाला।

सालावास स्मार्ट विलेज की 'जन्मदिन मनाओ पुण्य कमाओ' योजना का एक वर्ष पूर्ण

राज्यपाल के आदेश पर विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए सालावास गाँव में पिछले वर्ष 3 फरवरी, 2021 को 'जन्मदिन मनाओ पुण्य कमाओ' योजना शुरू की थी। योजना का उद्देश्य गौशाला में गायों के लिए चारे पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करना तथा ग्रामीणों में गौशाला में जन्मदिन मनाने की परंपरा विकसित करना था।

नोडल अधिकारी डॉ. दिनेश गहलोत ने बताया कि गाँव के सरपंच ओमाराम पटेल के जन्म दिवस से शुरु की गई इस योजना के तहत अब तक 65 ग्रामीणों ने गौशाला में जन्मदिन मना कर लगभग सात लाख की राशि गौशाला में भेंट की। गौशाला में एक ही परिवार कि तीन पीढियों द्वारा जन्मदिन मनाया गया, वही दूसरी ओर सौ वर्ष गांव छोड़कर गए परिवार ने भी वापस गाँव लौटकर गौशाला में जन्मदिन मनाया। जन्मदिन मनाने वाले का साफा, माला, स्मृति चिह्न से अभिनंदन किया जाता है जिसका संपूर्ण व्यय नोडल अधिकारी द्वारा ही किया जाता है। नोडल अधिकारी ने बताया कि योजना का एक वर्ष पूरा हो जाने पर गौशाला में एक कार्यक्रम का आयोजन भी किया जाएगा।

जोधपुर ब्रीथ बैंक की ओर से सालावास में जरूरतमंद हेतु राशन के पैकेट का वितरण

विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए सालावास स्मार्ट विलेज के नोडल अधिकारी की मांग पर जोधपुर ब्रीथ बैंक की ओर से सालावास गाँव में सूखे भोजन के पैकेट का वितरण किया। पहले चरण में पच्चीस परिवारों को यह पैकेट वितरित किए गए। उत्कर्ष के एम. डी. तरुण गहलोत ने इस हेतु गाड़ी को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। राशन सामग्री का यह वितरण माली समाज के अध्यक्ष संपतराज गहलोत, अमराराम पटेल, भीम प्रजापत तथा कैलाश तंवर ने मिलकर किया। जोधपुर ब्रीथ बैंक की ओर से अशोक भाटी तथा अजय ने यह वितरण कार्य किया।

समेकित बाल विकास योजना के अंतर्गत स्मार्ट विलेज मोगड़ा कलां गाँव को खेल सामग्री भेंट

विश्वविद्यालय की ओर से राज्यपाल श्री कलराज मिश्र की महती योजना स्मार्ट विलेज के अंतर्गत मोगड़ा कलां गाँव को गोद ले रखा है। नोडल अधिकारी प्रो. प्रवीण गहलोत ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा मोगड़ा कलां गाँव में प्रतिमाह एक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। समेकित बाल विकास योजना एक अद्वितीय बाल विकास कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य कुपोषण, स्वास्थ्य और युवा बच्चों के विकास की आवश्यकता को पूरा करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु विश्वविद्यालय द्वारा मोगड़ा कलां गाँव के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में खेल सामग्री भेंट की गई। मोगड़ाकलां गाँव के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अशोक कुमार पटेल ने बताया कि खेल सामग्री से लगभग 500 विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

महिला रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण शिविर के प्रमाण पत्र वितरित

सालावास स्मार्ट विलेज योजना के अंतर्गत गाँव की महिलाओं को रोजगार हेतु प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से 15 दिवसीय रोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण शिविर के समापन पर गाँव में स्थित कबीर आश्रम में प्रशिक्षणार्थियों के लिए प्रमाण-पत्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि महंत श्री अमर साहेब तथा महिला अध्ययन केंद्र के रिसर्च एसोसिएट डॉ. महेश परिहार ने प्रमाण पत्र वितरित किए। नोडल अधिकारी डॉ. दिनेश गहलोत ने बताया कि ब्यूटी पार्लर से सम्बन्धित इस प्रशिक्षण शिविर में गाँव की 21 महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। प्रशिक्षण के पश्चात् वे स्वयं अपना रोजगार स्थापित कर सकेंगी। महंत श्री अमर साहेब ने प्रशिक्षण शिविर को पुनीत कार्य बतलाते हुए इसके दूरगामी परिणामों पर प्रकाश डाला। डॉ. महेश परिहार ने गाँव में इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविर की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजन को इंगित किया।

जल, जंगल और जमीन आदिवासियों की अमूल्य धरोहर- प्रो. त्रिवेदी

आदिवासी अध्ययन केन्द्र का उद्‌घाटन

कला,शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय में आदिवासी अध्ययन केन्द्र का उद्‌घाटन कुलपति प्रो. प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। आदिवासी अध्ययन केन्द्र के निदेशक डॉ.जनक सिंह मीना ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बिरसा मुण्डा, रानी गाइदिन्ल्यू, वीर नारायण सिंह, झलकारी बाई, टंट्या भील, रीतारमण राजू, रामजी गोंड, फूलो, तिलका मांझी आदि के बारे में बताते हुए केन्द्र के उद्देश्यों को प्रस्तुत किया। केन्द्र की भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए डॉ. मीना ने बताया कि यह केन्द्र अन्तर अनुशासनात्मक उपागम पर आधारित होगा तथा इसमें शीघ्र ही प्रमाण पत्र एवं पी जी डिप्लोमा के पाठ्यक्रम तैयार किए जायेंगे और यह केन्द्र पूरे देश में संसाधन एवं नीति केन्द्र के रूप में कार्य करेगा जिसके लिए एक पुस्तकालय की स्थापना, एम ओ यू, पुरस्कार एवं सम्मान योजनाएं बनाई जायेंगी। केन्द्र के माध्यम से शीघ्र ही एक शोध पत्रिका शुरु की जायेगी।

मुख्य अतिथि उद्‌बोधन में कुलपति प्रो. त्रिवेदी ने कहा कि आज सरस्वती माँ एवं बिरसा मुण्डा के समक्ष जो दीप प्रज्वलित हुआ है वह दीपक निरन्तर जलता रहे।

डॉ. जनक सिंह मीणा बने स्टेट कमीशनर

गुजरात पुलिस डीआईजी एवं राष्ट्रीय मुख्य आयुक्त अनिल प्रथम ने जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ. जनक सिंह मीना की कर्मठता और कार्यो की सराहना करते हुए राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में राजस्थान सरकार में शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं राज्य मुख्य आयुक्त भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी पवन कुमार गोयल एवं हिन्दुस्तान स्काउट्स एवं गाइड्स के राज्य सचिव नरेन्द्र औदिच्य द्वारा हस्ताक्षरित वारन्ट ऑफ ऑनर जारी कर डॉ. जनक सिंह मीना को स्टेट कमीशनर के पद पर नियुक्त किया गया है।

डॉ. मीना डॉ. अंबेडकर नेशनल अवार्ड से सम्मानित

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के 37 वें राष्ट्रीय सम्मेलन में दलित, दमित, आदिवासी एवं वंचित साहित्य के क्षेत्र में किए गए महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए विश्वविद्यालय में आदिवासी केंद्र के निदेशक डॉ. जनक सिंह मीना को दिल्ली में आयोजित भव्य समारोह में डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय अवार्ड 2021 से सम्मानित किया गया।

डॉ. मीना बने आदिवासी अध्ययन केन्द्र के मानद निदेशक

कुलपति ने आदेश जारी कर राजनीति विज्ञान के सहायक आचार्य डॉ. जनक सिंह मीना को आदिवासी अध्ययन केन्द्र का मानद निदेशक नियुक्त किया है। इनकी नियुक्ति अगले आदेश तक जारी रहेगी। डॉ. जनक सिंह मीना अपने कार्यों के साथ आदिवासी अध्ययन केन्द्र के निदेशक पद का कार्यभार भी संभालेंगे।

आदिवासी केंद्र में धूमधाम से मना फुले एवं मुंडा जयंती

आदिवासी अध्ययन केंद्र के तत्त्वावधान में संविधान सभा के सदस्य रहे आदिवासी डॉ. जयपाल मुंडा तथा भारत की पहली शिक्षिका सावित्रीबाई फुले की जयंती मनाई गई। निदेशक डॉ जनक सिंह मीणा ने कहा कि इन दोनों ही महान व्यक्तित्वों ने विपरीत परिस्थितियों में दृढ़ इच्छाशक्ति एवं साहस का परिचय देते हुए दलित, दमित, आदिवासी, वंचित वर्ग एवं स्त्रियों के उत्थान के लिए अविस्मरणीय योगदान किया। मुख्य अतिथि अधिष्ठाता प्रो. किशोरी लाल रैगर ने कहा कि डॉ. जयपाल मुंडा का संघर्ष नैसर्गिकता को बचाने के लिए था। मुख्य वक्ता प्रो. कांता कटारिया ने अपने उद्बोधन में सावित्रीबाई फुले को विपरीत परिस्थितियों में भी अदम्य साहसी बताते हुए कहा कि उनकी आंदोलनों में क्रांतिकारी भूमिका रही है और उन्होंने सामाजिक क्रांति पैदा की। इस अवसर पर प्रो. यादराम मीणा, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. दिनेश गहलोत, हनुमान मीणा, डॉ. शीतल प्रसाद मीणा, डॉ. विजयश्री, सी.एस. मीणा, राजेश कुमार, भीम सिंह, सुल्तान सिंह आदि दानदाताओं ने आदिवासी अध्ययन केंद्र के लिए आवश्यक वस्तुएं भेंट कर हर संभव मदद का आश्वासन दिलाया।

स्वतंत्रता सेनानी गणपतराम ने सेवा भावना की अलख जगाई - डॉ. मीणा

आदिवासी अध्ययन केंद्र द्वारा महान् स्वतंत्रता सेनानी गणपतराम बगराणिया की 48 वीं पुण्यतिथि मनाई गई। डॉ. जनक सिंह मीणा ने अपने उद्बोधन में कहा कि गणपतराम जी एक क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जाने जाते हैं तथा वे महान समाजसेवी हैं। हम ऐसे महापुरुषों का अनुसरण कर उनके बताए हुए रास्तों पर चलेंगे तभी उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस अवसर पर बड़ी संख्या में कला संकाय के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

समाज विज्ञान शोध में घटना के मूल कारण एवं प्रभाव खोजने से समस्या का समाधान संभव - डॉ. मीणा

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा संपोषित एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के लोक प्रशासन विभाग द्वारा शोध प्रविधि विषय पर आयोजित दस दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में विश्वविद्यालय के आदिवासी अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ. जनक सिंह मीणा ने समाज विज्ञान में शोध प्रविधि का परिचयात्मक एवं शोध के चरण विषय पर अपने व्याख्यान दिए।

आयुर्वेदिक औषधियों पर शोध के लिए जेएनवीयू व आयुर्वेद विवि में एमओयू

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर व सर्वपल्ली राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर हुए। इसके अन्तर्गत जेएनवीयू के वनस्पति विशेषज्ञ जड़ी-बूटियों की पहचान व संवर्धन का कार्य करेंगे, जबकि आयुर्वेदाचार्य उनमें उपस्थित औषधीय पदार्थों पर शोध करेंगे। जेएनवीयू के कुलपति प्रो. प्रवीण चंद्र त्रिवेदी ने बताया कि वर्तमान में कोविड, डेंगू, चिकनगुनिया व स्वाइन फ्लू आदि बीमारियों के निदान में उपयोग में आने वाले जैव-पदार्थों का प्राथमिकता के साथ औषधीय उपयोग किया जा रहा है।

विवि के एसटी गर्ल्स हॉस्टल का नाम अब डायमंड हॉस्टल

विश्वविद्यालय के नया परिसर में स्थित एसटी गर्ल्स हॉस्टल का नाम बदल दिया गया। अब इस हॉस्टल का डायमंड हॉस्टल नामकरण किया गया है। कुलसचिव में आधिकारिक तौर पर आदेश जारी कर हॉस्टल के नाम में बदलाव किया।

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय व सरदार पटेल पुलिस विश्वविद्यालय के मध्य एम.ओ.यू.

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय व सरदार पटेल पुलिस, सुरक्षा एवं दाण्डिक न्याय विश्वविद्यालय के मध्य मेमोरेण्डम ऑफ अण्डर स्टैडिंग (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर हुए। एम.ओ.यू. के आयोजन का मुख्य उद्देश्य नई शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत विद्यार्थियों को बहुउद्देश्य वाले विषयों के चयन की वैकल्पिक व्यवस्था करना है।

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के पास विधि संकाय में विधि से सम्बन्धित सभी प्रकार के कोर्स उपलब्ध हैं जबकि सरदार पटेल विश्वविद्यालय के पास सुरक्षा व दाण्डिक न्याय के कोर्स उपलब्ध हैं। अतः दोनों विश्वविद्यालय के मध्य एम.ओ.यू. होने से आगामी सत्र में नई शिक्षा प्रणाली लागू होने पर विद्यार्थियों को दोनों विश्वविद्यालय के मध्य स्थानान्तरण कर उन्हें विभिन्न प्रकार के विषय पढ़ने व कार्यशाला में भाग लेने की सुविधा प्रदान की जाएगी। एम.ओ.यू दोनों विश्वविद्यालय के मध्य विभिन्न प्रकार की शोध परियोजना, शोध पत्र का प्रकाशन व सेमीनार का आयोजन भी साझा रूप से किया जा सकेगा। एम.ओ.यू. पर जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. त्रिवेदी ने तथा सरदार पटेल पुलिस विश्वविद्यालय की तरफ से कुलपति डॉ. श्री आलोक त्रिपाठी ने हस्ताक्षर किए।

विश्वविद्यालय का गुरुदक्षता कार्यक्रम विधिवत सम्पन्न

यूजीसी एचआरडीसी जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर द्वारा समायोजित 29 दिवसीय गुरु दक्षता फैकल्टी इंडक्शन प्रोग्राम सम्पन्न हुआ।

समापन समारोह में केंद्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर छत्तीसगढ़ के कुलपति आदरणीय प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने बतौर मुख्य अतिथि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से सभी प्रतिभागियों को संबोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पी. सी. त्रिवेदी जी ने की। सह-अध्यक्षा प्रो. आशा शुक्ला जी (कुलपति भी.अ.सा.वि. विवि) ने प्रतिभागियों को आशीर्वचन प्रदान किए। विशिष्ट अतिथि डॉ. आनंद शुक्ला आइपीएस ने शिक्षकों के लिए इस कार्यक्रम की प्रासंगिकता व महत्त्व के बारे में बताया।

एचआरडीसी जोधपुर के डायरेक्टर व कार्यक्रम संचालक प्रो. राजेश कुमार दुबे ने 29 दिनों तक संचालित कार्यक्रमों के विषय में अतिथियों को अवगत कराया। दस मॉड्यूल में विभक्त इस कार्यक्रम में 175 घंटे तक देश-विदेश के लगभग 115 वक्ताओं ने समस्त प्रतिभागियों को नई शिक्षा नीति, मूक डेवलपिंग प्रोग्राम, स्टडी वीडिओ मेकिंग, एसडीजी, एनवायरमेंटल एथिक्स, ई कंटेंट डेवलपिंग, रिसर्च प्रोजेक्ट इत्यादि अनेक शिक्षकोपयोगी महत्त्वपूर्ण विषयों पर सार्थक चर्चा व विशिष्ट व्याख्यान दिए।

जुनून से ही मिलती है सफलता- डॉ.सुराणा

विश्वविद्यालय से संबद्ध कमला नेहरू महिला महाविद्यालय में बी. कॉम प्रथम वर्ष की छात्राओं हेतु आमुखीकरण कार्यक्रम रखा गया जिसको ओरियन्टेशन कम करियर काउंसलिंग सेशन नाम दिया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं प्रमुख वक्ता के रूप में भूतपूर्व आईएएस ऑफिसर और दूरदर्शन के प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम के एंकर और रेडियो सिंगर, वक्ता डॉ. महेंद्र सुराणा थे। महेंद्र जी सुराणा ने अपने वक्तव्य में खासतौर से किसी कार्य की सिद्धि हेतु जुनून पर बल दिया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में विधि संकाय की अधिष्ठाता प्रो. चंदनबाला ने विलियम शेक्सपियर के कथन फ्रायल्टी दाई नेम इज वुमन को चुनौती देते हुए उसे बदला और इंटीग्रिटी दाई नेम इज वूमन, ऑनेस्टी दाई नेम इज वूमन कहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.(डॉ.) प्रवीण चंद्र त्रिवेदी ने व्यक्ति को लगातार सीखते रहने, जबान से मीठा बोलने, हृदय में क्रांति रखने और मन में शांति रखने की बात कही। उन्होंने विद्यार्थियों में देश के प्रति देशभक्ति की भावना रखने के लिए आह्वान किया, साथ ही बिना किसी भेदभाव और हीन भावना के लक्ष्यों पर नजर टिकाए रखने पर बल दिया।

प्रो. लूंकड बनी सिंडीकेट सदस्य

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति ने आदेश जारी कर कमला नेहरू महिला महाविद्यालय की निदेशक प्रो. संगीता लूंकड को सिंडीकेट सदस्य नियुक्त किया।

प्रो. सुशीला शक्तावत को अनुसंधान पीठ निदेशक का कार्यभार

कुलपति ने आदेश जारी कर इतिहास विभाग की प्रोफेसर डॉ. सुशीला शक्तावत को वीरवर राव चन्द्रसेन इतिहास अनुसंधान पीठ की निदेशक नियुक्त किया है। इनकी नियुक्ति अगले आदेश तक रहेगी। डॉ. शक्तावत अपने कार्यों के साथ वीरवर राव चन्द्रसेन इतिहास अनुसंधान पीठ निदेशक के कार्य भी संभालेंगीं।

डॉ. सिसोदिया बने क्रीड़ा मंडल के सचिव

विश्वविद्यालय के कुलपति ने आदेश जारी कर शारीरिक शिक्षा के उप निदेशक डॉ. अमन सिंह सिसोदिया को क्रीड़ा मंडल का सचिव नियुक्त किया। डॉ. सिसोदिया अपने कार्यों के साथ क्रीड़ा मंडल सचिव पद का कार्य भी संभालेंगे।

महाकवि कालिदास के सन्देश सार्वभौमिक हैं: प्रो. सरोज कौशल

संस्कृत विभाग में कालिदास जयंती का आयोजन

संस्कृत विभाग में देवोत्थानी एकादशी के अवसर पर कालिदास जयंती का आयोजन हुआ। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. मंगलाराम ने महाकवि कालिदास की रचनाओं के संदेश की विशेषताओं को रेखांकित किया। प्रो. सरोज कौशल ने महाकवि कालिदास के ग्रन्थों मेघदूत, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, रघुवंशम, कुमारसम्भवम् आदि ग्रन्थों की सूक्तियाँ बताकर उनकी व्याख्या की। पात्रों के चारित्रिक उत्कर्ष से कवि ने मानव-जीवन का मार्ग बताया है। कालिदास ने प्रकृति को भी मानव के समान निरूपित कर पर्यावरण-सम्वेदना का उच्च आदर्श प्रस्तुत किया है। उनके द्वारा प्रयुक्त अलंकार न केवल साहित्य में सौन्दर्य की वृद्धि करते हैं अपितु वे जीवन में भी सौन्दर्य का संवर्धन करते हैं। मधुर आकृति वालों के लिए कौनसा पदार्थ आभूषण नहीं बन जाता है। यह सौन्दर्य लक्षण कृत्रिमता का खण्डन करता हैं। डॉ. पुष्पा गुप्ता ने महाकवि कालिदास के द्वारा किये गये ऋतु-वर्णन शकुन्तला तथा पार्वती के उत्कृष्ट चरित्र का उदाहरण देते हुए स्त्री-सशक्तिकरण की कालिदासीय व्याख्या की। इस अवसर पर डॉ. गुप्ता ने कालिदास पर स्वरचित कविता भी सुनाई। कार्यक्रम में विभाग के यादराम मीना के साथ विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय अतिथि गृह में नव सुसज्जित कक्षों का लोकार्पण

विश्वविद्यालय के अतिथि गृह में आधुनिक सुविधाओं से निर्मित नवसुसज्जित कक्षों का शुभारंभ कुलपति प्रो. पी.सी. त्रिवेदी ने किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. त्रिवेदी ने कहा कि अतिथि गृह विश्वविद्यालय की शान होता है, जहाँ हम अतिथियों का स्वागत सत्कार कर सकें। अतिथि गृह प्रबंध समिति के अध्यक्ष डॉ. महीपाल सिंह राठौड़ ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि अतिथि गृह के आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित कक्ष का लाभ यहाँ पधारने वाले अतिथियों को मिलेगा। कार्यक्रम में सिंडिकेट सदस्य प्रो. संगीता लूंकड़, प्रो. चंदनबाला, प्रो. किशोरीलाल रैगर, प्रो. पवन कसेरा, प्रो. ज्ञान सिंह शेखावत, प्रो. के.आर. गोयल, प्रो. के.आर. पटेल, प्रो. सरोज कौशल, प्रो. मीना बरड़िया, परामर्श समिति सदस्य डॉ. राजश्री राणावत, डॉ. रचना दिनेश, डॉ. कांता चौधरी, डॉ. ओम प्रकाश विश्नोई, डॉ. ललित पंवार, डॉ. रेणु शर्मा, डॉ. अंकित मीणा, अतिथि गृह इंचार्ज विनीत गुप्ता, डॉ. भगवान सिंह शेखावत, डॉ. प्रेम सिंह, डॉ. महेन्द्र सिंह, डॉ. ओम प्रकाश के साथ शिक्षक, कर्मचारी उपस्थित रहे।

विवि में शोध प्रकोष्ठ कार्यालय भवन का किया उद्घाटन

केन्द्रीय कार्यालय में शोध प्रकोष्ठ कार्यालय भवन का उद्घाटन विवि के कुलपति प्रो. पी.सी. त्रिवेदी ने किया। अब विश्वविद्यालय के सभी संकायों का शोध से संबंधित कार्य अब शोध प्रकोष्ठ कार्यालय में संचालित किया जाएगा। इससे पूर्व में कार्य अकादमिक कार्यालय द्वारा संचालित किया जाता था। नए कार्यालय में शोधार्थियों के लिए बैठने, सूचना के लिए डिसप्ले बोर्ड सहित सभी सुविधाएं उपलब्ध करवाई जायेंगी। कार्यालय उद्घाटन के दौरान शोध प्रकोष्ठ निदेशक प्रो. ज्ञानसिंह शेखावत, कुलसचिव गोमती शर्मा, अधिष्ठाता विज्ञान संकाय प्रो. पवन कसेरा, प्रो. खरता राम पटेल, प्रो. सुनील आसोपा, शोध छात्रसंघ अध्यक्ष सवाई सिंह सारुण्डा सहित शोधार्थी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

नवनिर्मित कक्षा, प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय का उद्घाटन

नोडल अधिकारी प्रो. प्रवीण गहलोत ने बताया कि विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय में रूसा अनुदान राशि से नवनिर्मित तथा नवीनीकरण कक्षाें का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पी.सी. त्रिवेदी द्वारा किया गया। कुलपति ने कहा कि कक्षा, प्रयोगशाला, परीक्षानियंत्रक कक्ष व पुस्तकालय के नवीनीकरण से विश्वविद्यालय में सुविधाओं में विस्तार हुआ है। विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. कसेरा ने बताया कि विज्ञान संकाय में परीक्षा नियंत्रक कक्ष व अधिष्ठाता कक्ष की अति आवश्यकता थी। रसायन शास्त्र की विभागाध्यक्ष प्रो. संगीता लूंकड़ ने बताया कि इस विभाग को लम्बे समय से प्रयोगशाला की आवश्यकता थी, जो रूसा अनुदान राशि से पूर्ण हुई है। रसायन शास्त्र विभाग में वर्ष 1992 के रसायन शास्त्र एलयूमिनी के द्वारा शौचालय का आधुनिकीरण एवं जीर्णोद्धार किया गया।

विज्ञान संकाय में आमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित

सक्रिय स्वयं सेवकों को प्रशस्ति-पत्र देकर किया सम्मानित

विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय की राष्ट्रीय सेवा योजना के बैनर तले एक दिवसीय शिविर का आयोजन वनस्पति शास्त्र विभाग के बोटैनिकल गार्डन में किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक प्रो. के.आर. पटेल के निर्देशानुसार इस शिविर का आयोजन स्नातकोत्तर स्तर के स्वयं सेवकों के लिए किया गया। वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी प्रो. प्रवीण गहलोत ने बताया कि इस शिविर में पूर्वार्द्ध कक्षा के नए स्वयं सेवकों का आमुखीकरण एवं पंजीयन किया गया तथा उत्तरार्द्ध कक्षा के स्वयं सेवकों का ससम्मान विदाई समारोह रखा गया। इसी के अन्तर्गत पिछले पाँच वर्षों से राष्ट्रीय सेवा योजना के पंद्रह सक्रिय स्वयंसेवकों को प्रशस्ति-पत्र देकर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

स्काउटिंग ज्ञानार्जन, कौशल विकास एवं संस्कारों से विभूषित करने का माध्यम : प्रो. त्रिवेदी

विश्वविद्यालय में रोवर-रेंजर ग्रुप लीडर कार्यालय के उद्घाटन के अवसर पर कुलपति त्रिवेदी ने बताया कि स्काउटिंग जीवन निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण के लिए एक महत्त्वपूर्ण आंदोलन है। विद्यार्थियों को इनके नियमों को आत्मसात् करना चाहिए। विश्वविद्यालय की स्थापना के पश्चात् यह पहला अवसर था जब विश्वविद्यालय रोवर-रेंजर ग्रुप लीडर के लिए एक स्थायी कार्यालय की स्थापना की गई। ग्रुप लीडर डॉ भरत देवड़ा ने बताया कि जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय राजस्थान का एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय हैं जहाँ रोवर स्काउटिंग की गतिविधियाँ सुचारु रूप से संचालित हो रही हैं।

प्रो. जेताराम विश्नोई की 57वी जयंती पर पौधे भेंट

प्रो. जेताराम विश्नोई की 57वी जयंती पर

आज 15 दिसंबर को प्रो जेताराम विश्नोई प्लांट बैंक, कला विभाग, जेएनवीयू में उनके पुत्रों द्वारा फल एवं फूलों के पौधे भेंट कर प्रतिवर्ष पौधे भेट करने का संकल्प लिया। प्रो. विश्नोई विश्वविद्यालय में कई पदों पर कार्यरत रहे। इस अवसर पर डॉ निधि, अशोक बिश्नोई, राहुल बिश्नोई और कला विभाग के छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों में डेंगू रोग उन्मूलन का जज्बा

विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना, विज्ञान संकाय के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अशोक कुमार पटेल ने आपातकालीन स्थिति में एसडीपी डोनेट कर डेंगू रोग से ग्रसित मरीज की जान बचाई। इसी क्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी ने स्वयं एसडीपी दान कर अपने स्वयंसेवकों के लिए उदाहरण पेश कर उन्हें प्रोत्साहित करने का कार्य किया। डॉ. अशोक कुमार पटेल ने बताया कि उन्होंने अपनी कक्षा शुरू की ही थी कि उनके पास बाड़मेंर निवासी राजेन्द्र चारण का फोन आया कि उनके जीजाजी भोमदान चारण का डेंगू की वजह से प्लेटलेट काउंट घटकर मात्र 3000 रह गया हैं व उनका जीवन संकट में है तथा उन्हें तुरंत ओ-पॉजिटिव ब्लड के एसपीडी की जरूरत हैं। डॉ. पटेल ने अपने विभागाध्यक्ष से अनुमति लेकर क्लास छोड तुरंत मथुरादास अस्पताल पहुँचे एवं प्रारंभिक जाँच के बाद एसडीपी डोनेट किया।

विश्वविद्यालय के दो छात्रों का गणतंत्र दिवस परेड हेतु हुआ चयन

राष्ट्रीय सेवा योजना के विज्ञान संकाय के दो स्वयं सेवकों का वर्ष 2022 की गणतंत्र दिवस समारोह पर राजपथ पर होने वाली परेड हेतु चयन हुआ है। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक प्रो. के.आर. पटेल ने बताया कि वर्ष 2022 के गणतंत्र दिवस परेड हेतु शिविर का आयोजन बियानी कॉलेज, जयपुर में किया गया था। शिविर में स्वयंसेवकों से योग, परेड, सांस्कृतिक कार्यक्रम, व्यक्तित्व विकास इत्यादि मापदंड पर प्रशिक्षण देकर अंतिम चयन किया गया। उन चार स्वयंसेवकों में से जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के दो स्वयं सेवक जयसूर्या व गिरिराज परिहार चयनित हुए हैं।

स्वयंसेवक की प्रेरणा से रक्तदान शिविर का आयोजन

राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक प्रो के. आर. पटेल ने बताया कि राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक एमएससी भौतिक शास्त्र के फाइनल ईयर का छात्र जयसूर्या लाइब्रेरी में बैठकर पढ़ाई कर रहा था तभी उसके पास एनएसएस द्वारा बनाए गए एनएसएस ब्लड डोनर व्हाट्सएप ग्रुप पर एक मैसेज आया कि मेडिपल्स हॉस्पिटल में हृदय रोग से पीड़ित 6 वर्षीय बालक बबलू को रक्त की आवश्यकता है। उसी समय जयसूर्या ने लाइब्रेरी में पढ़ाई कर रहे 3 छात्रों प्रकाश कुमार, धर्माराम तथा सुटू परिहार को रक्तदान के लिए प्रेरित किया जिससे इन तीनों छात्रों ने तुरंत मेडिपल्स पहुँचकर रक्तदान कर बच्चे के जीवन बचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

प्रो. लूंकड रसायन विज्ञान विभागाध्यक्ष एवं डॉ. झाला वीकर सेक्शन प्रभारी नियुक्त

कुलपति महोदय ने आदेश जारी कर रसायन विज्ञान विभाग की प्रोफेसर डॉ. संगीता लूंकड़ को रसायन विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष नियुक्त किया है। डॉ. लूंकड़ की नियुक्ति 1 दिसम्बर, 2021 से अगले तीन वर्षों तक रहेगी।

वही कला संकाय के भूगोल विभाग के सहायक आचार्य डॉ. ललित सिंह झाला को कमजोर वर्ग के लिए कोचिंग सेन्टर का प्रभारी नियुक्त किया है।

प्रो. रैगर बने सिंडीकेट सदस्य

विश्वविद्यालय के कला संकाय अधिष्ठाता प्रो. किशोरीलाल रैगर को सिंडीकेट सदस्य नियुक्त किया गया। प्रो. रैगर की नियुक्ति 1 दिसंबर से एक वर्ष के लिए की गई।

कामायनी का यह मंचन मेरे लिए अविस्मरणीय पल- प्रो.त्रिवेदी

जेएनवीयू में 'कामायनी' का अभूतपूर्व मंचन

जब तक मानव स्वत्व की भावना से ऊपर उठकर परहित के संदर्भ में सोचेगा नहीं ,तब तक आत्मस्थिति को प्राप्त नहीं कर सकता। सच्चिदानंद की प्राप्ति अपनी व्यक्तिगत सत्ता को विश्व सत्ता में निमग्न करने से ही सम्भव है।

इसी मूल मंत्र को रेखांकित करता हुआ कामायनी का रंगमंचीय प्रदर्शन थिएटर सेल के तत्त्वावधान में बृहस्पति सभागार में हुआ। मनु के रूप में अंग्रेजी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. हितेंद्र गोयल भाव को प्रदर्शित करने, संवादों के साथ न्याय करने और अपने अभिनय कौशल से उपस्थित दर्शकों के दिल तक पहुँचने में सफल रहे। श्रद्धा का किरदार निभाने वाली डॉ. नीतू परिहार, इड़ा के किरदार में नेहा रांकावत, लज्जा के किरदार में निर्मला राव और आकुली व किलात के किरदार में रमेश बोहरा और एमएस ज़ई ने अपने अभिनय से कामायनी के कथानक को मंचन के माध्यम से अभूतपूर्व तरीके से प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति ने मंचन से गद्गद् हो सभी अभिनेताओं की प्रशंसा की और विश्वविद्यालय प्रांगण में ऐसे ही प्रदर्शनों के लगातार मंचित होने की भी मंशा अभिव्यक्त की। अपने स्वागत उद्बोधन में डॉ. हितेंद्र गोयल ने कुलपति जी को यह विश्वास दिलाया कि उनके प्रयासों से नवगठित थिएटर सेल आने वाले समय में न सिर्फ नाट्य प्रदर्शन बल्कि नाट्य कार्यशालाओं के साथ-साथ नाट्य लेखन, नाट्य पठन एवं अभिनय की छोटी-छोटी बारीकियों पर कार्य करते हुए छात्रों में छिपे अभिनय कौशल को निखारने का प्रयास करेगा और विश्वविद्यालय शिक्षकों के सहयोग से और अलग-अलग रंगमंडलों के समायोजन से व्याख्यानमालाओं का भी आयोजन करेगा।

दिव्यांग से दिव्यता की ओर

विश्व एड्स और दिव्यांग दिवस

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक परिषद् छात्र सेवा मंडल के तत्त्वावधान में विश्व एड्स और दिव्यांग दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम 'हौसलों की उड़ान' प्रज्ञा निकेतन छात्रावास में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि और बीज वक्ता के रूप में डॉ.अरविंद माथुर ने विश्व एड्स दिवस और विश्व दिव्यांग दिवस के अवसर पर एड्स जैसी महामारी की जानकारी दी एवं इस महामारी से बचने के साथ-साथ उपयोगी जानकारियों को साझा किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में महिला अध्ययन केंद्र की निदेशक प्रो. सरोज कौशल ने भारतीय संस्कृति एवं सनातन परंपरा के उदाहरणों से व्यक्ति के अंदर विद्यमान दिव्यता के बारे में बात करते हुए छात्रों को संबोधित किया। प्रज्ञा निकेतन छात्रावास की अध्यक्ष प्रो. कुसुमलता भंडारी ने दिव्यांग विद्यार्थियों की उपलब्धियों की जानकारी दी। अध्यक्षता विधि संकाय की अधिष्ठाता प्रो. चंदनबाला ने की। उन्होंने अपने वक्तव्य में समस्त विद्यार्थियों को हमेशा बाधाओं से ऊपर उठकर आगे बढ़ते रहने का सन्देश दिया। इससे पूर्व छात्र सेवा मंडल की अध्यक्षा प्रो. मीना बरड़िया ने आगंतुक सभी अतिथियों का स्वागत किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. हितेंद्र गोयल ने किया और कार्यक्रम का सफल संचालन सह-सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. मीता सोलंकी ने किया।

काबा और काशी भी होगा, पहले हिन्दुस्तान रखेंगे: प्रो. त्रिवेदी

युवा दिवस पर भाषण प्रतियोगिता

छात्र सेवा मण्डल की ओर से विवेकानंद की जयन्ती व राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. त्रिवेदी ने की। कार्यक्रम में डॉ. अर्जुन सिंह सांखला व के. के.बोराणा निर्णायक के रूप में उपस्थित रहे। छात्र सेवा मण्डल की अध्यक्ष प्रो. मीना बरड़िया ने स्वागत उद्बोधन दिया। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. त्रिवेदी ने 'स्वामी विवेकानंद' के जीवन से अनेक प्रसंगों का उदाहरण देते हुए भारतीय संस्कृति के महत्त्व को प्रतिपादित किया। मुख्य अतिथि प्रो. संगीता लूकड़ ने युवा शक्ति के महत्त्व को बताया। कार्यक्रम में कुल 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने युवा एवं भारतीय संस्कृति के आयामों पर सुन्दर एवं प्रभावकारी प्रस्तुतियाँ दीं। प्रतियोगिता में एम.ए. राजनीति विज्ञान की आकांक्षा परिहार प्रथम, एल.एल.बी. द्वितीय वर्ष की प्रियंका सिंह नरूका एवं बी.ए. प्रथम वर्ष की उर्वी जोधा तृतीय स्थान पर रहीं। इस कार्यक्रम में छात्र सेवा मंडल की ओर से आयोजित होने वाले 'अमृतोत्सव' के पोस्टर का विमोचन किया गया।

प्रो. कौशल ने दिया जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में व्याख्यान

प्रो. सरोज कौशल ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा नवम्बर, 2021 में आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में 'शोध की भारतीय परम्पराः सिद्धान्त एवं प्रयोग' विषय पर व्याख्यान दिया। प्रो. कौशल ने टीकाकारों, भाष्यकारों तथा समकालीन संस्कृत कवि परम्परा में से अनेक शोध-सूत्रों का अन्वेषण कर उनकी नवोन्मेषपूर्वक सोदाहरण व्याख्या कर नूतन दृष्टि प्रदान की।

पादप गुणसूत्र अध्ययन पर व्याख्यान एवं अभिनन्दन समारोह

वनस्पति शास्त्र विभाग में पूर्व कार्यरत एवं वर्तमान में नॉर्थ-ईस्टर्न हिल वि.वि. (नेहु) शिलोंग, (मेघालय) के प्रो. एस. रामाराव ने पादप गुणसूत्र अध्ययन विषय पर व्याख्यान दिया। वनस्पति शास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो. सुनीता अरोडा ने प्रो. राव के थार डेजर्ट व अन्य पादपों के साइटोजेनेटिक्स में किए गये उल्लेखनीय कार्यों का विस्तृत वर्णन करते हुए उनका स्वागत किया। प्रो. रामाराव ने छात्रों को स्किल डेवलपमेन्ट के लिये गुणसूत्र संरचना संख्या केरियोटाइप एवं बहुगुणिता का सावधानी, धैर्य एवं लगन से अध्ययन करने पर जोर दिया। प्रो. पवन कुमार कसेरा, अधिष्ठाता, विज्ञान संकाय एवं प्रो. एच.आर. डागला ने प्रो. एस. रामा राव को साफा व स्मृति चिन्ह से स्वागत किया। प्रो. प्रवीण गहलोत ने मंच संचालन एवं प्रो. भाना राम गाडी ने आभार जताया।

विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण व्यवस्था हो - प्रो. त्रिवेदी

सायंकालीन अध्ययन संस्थान में आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ का कुलपति प्रो. त्रिवेदी ने उद्घाटन किया। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि अच्छी कार्यप्रणाली व्यक्ति की सोच पर निर्भर करती है तथा नई शिक्षा नीति के माध्यम से सांयकालीन अध्ययन संस्थान बड़ी भूमिका निभा सकता है। सायंकालीन अध्ययन संस्थान के निदेशक प्रो. के.ए. गोयल ने संस्थान की गतिविधियों से परिचित करवाया और कहा कि संस्थान परिसर में अध्ययन-अध्यापन का वातावरण बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं।

फीस रिफंड वाट्सऐप हैल्पलाइन सेवा प्रारम्भ

विश्वविद्यालय की ओर से फीस रिफंड के संदर्भ में एक वाट्स ऐप हैल्पलाइन सेवा प्रारम्भ की गई है। यह सेवा कार्य दिवसों में 10 बजे से 5 बजे तक उपलब्ध रहेगी। इसका नम्बर है 9571422993 छात्रों की कठिनाई को दूर करने के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय की ओर से इस सेवा को प्रारम्भ किया गया है।

प्रो. बरड़िया ने संभाला छात्र सेवा मण्डल का कार्यभार

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में सह-शैक्षणिक एव सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से सर्वांगीण विकास हेतु संचालित छात्र सेवा मण्डल की गतिविधियों को सक्रियता देने हेतु कुलपति प्रो. प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी ने लोक प्रशासन विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. मीना बरड़िया को छात्र सेवा मण्डल का चेयरमैन नियुक्ति किया। सचिव डॉ. जालमसिंह रावलोत ने बताया कि प्रो. बरड़िया ने छात्र सेवा मण्डल के अध्यक्ष का कार्यभार संभाला। प्रो. बरड़िया ने बताया कि इस वर्ष आयोजित होने वाली सभी गतिविधियाँ आजादी के अमृत महोत्सव थीम पर केन्द्रित रहेगी जिससे विद्यार्थियों में देश के गौरवपूर्ण इतिहास के प्रति जागरूकता के साथ-साथ जुड़ाव महसूस हो।

छात्र सेवा मण्डल की ओर से 'अमृतोत्सव' के अंतर्गत हुए कई कार्यक्रम

छात्र सेवा मण्डल की ओर से 'अमृतोत्सव' का हिंदी व अंग्रेजी वाद-विवाद प्रतियोगिता द्वारा शुभारम्भ हुआ। हिन्दी व अंग्रेजी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन वर्चुअल माध्यम से किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने सहभागिता की। प्रतियोगिता के आरंभ में छात्र सेवा मण्डल की अध्यक्ष प्रो. मीना बरड़िया ने स्वागत उद्बोधन दिया। हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय था- **'भारत की पहचान भारतीयता से ही संभव है'।** प्रतियोगिता में कुल 62 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में निर्णायकगण जयेश भंडारी व सोनीला गौड थे जो कि विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र है। छात्र सेवा मण्डल से राष्ट्रीय स्तर पर वाद-विवाद प्रतियोगिता जीत चुके हैं। हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता में श्रद्धा शर्मा प्रथम, यीशु चौहान द्वितीय व यश थानवी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अंग्रेजी वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय था- **'To preserve Independence is more difficult than getting Independence'** इस प्रतियोगिता में कुल 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया। निर्णायकगण के रूप में राजस्थान विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के मोहित जीनगर तथा राजकीय महाविद्यालय के व्याख्याता डॉ. प्रवीण मौजूद थे। प्रतियोगिता में प्रियंका सिंह नरूका प्रथम, दीक्षिता सोनी द्वितीय तथा आकांक्षा परिहार व श्रद्धा शर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कविता एवं आशु भाषण प्रतियोगिताएं

सांस्कृतिक सप्ताह अमृतोत्सव के दूसरे दिन हिंदी कविता वाचन, अंग्रेजी कविता वाचन एवं आशुभाषण प्रतियोगिताएं संपन्न हुई। आभासी मंच से हिंदी और अंग्रेजी कविता वाचन में 106 विद्यार्थियों ने भाग लिया। दोनों ही कविता वाचन प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने माँ, प्रकृति, देश, शिक्षा, समाज, जीवन, जल, मानव, प्रेम, देवता, आधुनिकता जैसे विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं। अंग्रेजी कविता वाचन प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित

अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. कल्पना पुरोहित ने विद्यार्थियों को संबोधित कर उत्साहवर्धन किया। प्रतियोगिता में अनुष्का प्रथम, प्रियंका सिंह नरूका द्वितीय और हर्षिता भाटी तृतीय रहे। निर्णायक डॉ. नूतन वर्मा (महाराष्ट्र) और डॉ. रश्मि थीं। हिंदी कविता वाचन प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में कला एवं समाज विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. किशोरी लाल रैगर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए सह-शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रेरित किया। प्रतियोगिता में यश थानवी प्रथम, हर्षिता भाटी व सौम्या जोशी द्वितीय और मनीष चारण तृतीय रहे। निर्णायक केएन कॉलेज की पूर्व निदेशक प्रो. कैलाश कौशल एवं कवि राम अकेला थे। आभासी मंच पर 34 विद्यार्थियों ने आशुभाषण प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता में नीलम कंवर प्रथम, हर्षिता भाटी द्वितीय व पुलकित सुराणा तृतीय रहे। निर्णायक डॉ. अरुण व्यास और डॉ. माया चौधरी थे।

सामान्य ज्ञान व नृत्य प्रतियोगिता सम्पन्न

सांस्कृतिक सप्ताह 'अमृतोत्सव' के तीसरे दिन लोक नृत्य एवं शास्त्रीय नृत्य के साथ साथ सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिताएं सम्पन्न हुईं। शास्त्रीय व लोक नृत्य प्रतियोगिता में कुल 52 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। प्रतियोगिता में प्रसिद्ध नृत्यांगना रेखा बालर व उर्मी मुखर्जी निर्णायक के रूप में रहीं।

शास्त्रीय नृत्य प्रतियोगिता में नाव्यांजली अग्रवाल ने प्रथम, कृतिका ने द्वितीय तथा कविता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। लोक नृत्य प्रतियोगिता में भाविका राठौड ने प्रथम, तनीषा गहलोत ने द्वितीय तथा विकास लखारा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। डॉ. भूमिका द्विवेदी व डॉ. मीता सोलंकी ने प्रतियोगिता का संचालन किया तथा छात्र सेवा मण्डल के सचिव डॉ. जालम सिंह रावलोत ने धन्यवाद ज्ञापित किया। सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में 180 से अधिक प्रतिभागियों ने ऑनलाइन आवेदन किया, जिनका 30 सवालों द्वारा ऑनलाइन स्क्रीनिंग टेस्ट हुआ। स्क्रीनिंग में 13 प्रतिभागियों का चयन हुआ, जिनको जूम प्लेटफॉर्म पर 5 राउण्ड में सामान्य ज्ञान विज्ञान के साथ-साथ विजुअल इमेजेस से संबंधित प्रश्न पूछे गये। प्रतियोगिता में किशना राम प्रथम, रमेश कुमार द्वितीय और घनश्याम जाखड़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में प्रो. सतीश हरित थे।

कैनवास पर उतरे आजादी के रंगः 'अमृतोत्सव' के चौथे दिन हुई ललित कला प्रतियोगिताएं

'अमृतोत्सव' के चौथे दिन ऑन स्पॉट पेंटिग व कोलाज मेकिंग प्रतियोगिताएं सम्पन्न हुई। ऑन स्पॉट पेंटिग का विषय 'आजादी की ओर' तथा कोलाज मेकिंग का विषय 'जे. एन.वी.यू. मेरा घर' और 'कोरोना' था। इन विषयों पर कुल 82 प्रतिभागियों ने रंगों के माध्यम से अपनी कला को कैनवास पर उतारा। कोविड परिस्थिति और प्रतिभागियों

की संख्या को ध्यान में रखते हुए प्रतियोगिता के केन्द्र कमला नेहरू महिला महाविद्यालय तथा ललित कला विभाग, विश्वविद्यालय नया परिसर रखे गये।

ललित कला विभाग में प्रतियोगिता का संचालन डॉ. रेनू शर्मा तथा डॉ. ऋतु जौहरी ने किया तथा छात्र सेवा मण्डल की अध्यक्ष प्रो. मीना बरड़िया ने छात्राओं को छात्र सेवा मण्डल के बारे में बताया तथा प्रतियोगिता के नियम समझाए। कमला नेहरू महिला महाविद्यालय में छात्र सेवा मण्डल के सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. हितेन्द्र गोयल ने प्रतिभागियों का स्वागत कर छात्र सेवा मण्डल के बारे में बताया तथा डॉ. मीता सोलंकी और डॉ. नम्रता स्वर्णकार ने प्रतियोगिता का संचालन किया। प्रतियोगिता के संचालन में विशेष सहयोग छात्र सेवा मण्डल के वरिष्ठ लिपिक ओमप्रकाश शर्मा व कम्प्यूटर ऑपरेटर तेजस चौहान का रहा। प्रतियोगिता का परिणाम सांस्कृतिक सप्ताह के अंतिम दिन घोषित किया जाएगा।

'अमृतोत्सव' के पाँचवें दिन कुल 7 प्रतियोगिताएं सम्पन्न

'अमृतोत्सव' के पाँचवें दिन रंगमंच संबंधी एकल अभिनय, मूकानिभय, संवाद अदायगी और मिमिक्री प्रतियोगिताएं छात्र सेवा मण्डल, कार्यालय, पुराना परिसर में सम्पन्न हुई। इन प्रतियोगिताओं में कुल 30 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. अमनसिंह सिसोदिया मौजूद रहे। रंगमंचीय प्रतियोगिताएँ प्रो. जयश्री वाजपेयी के निर्देशन में सम्पन्न हुई। एकल अभिनय प्रतियोगिता में यिक्षु कुमारी चौहान प्रथम, कशिश अग्रवाल व दिव्या चौहान द्वितीय और रामरश्मी सोमानी व प्रेमा तृतीय स्थान पर रहे। मिमिक्री प्रतियोगिता में दिव्या चौहान व तनीशा गहलोत प्रथम तथा खुश तिवारी द्वितीय स्थान पर रहे। मूकाभिनय प्रतियोगिता में यिक्षु कुमारी चौहान प्रथम, खुश तिवारी द्वितीय और दिव्या चौहान तृतीय स्थान पर रहे।

संवाद अदायगी प्रतियोगिता में विदेही प्रथम, रितिका चौधरी द्वितीय और रामरश्मी सोमानी तृतीय स्थान पर रहे। प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में प्रसिद्ध रंगकर्मी रमेश नामदेव भाटी और मज़ाहिर सुल्तान ज़ई मौजूद थे। संयोजन और संचालन डॉ. हितेंद्र गोयल और डॉ. मीता सोलंकी ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन सचिव डॉ. जालम सिंह रावलोत ने दिया। यह प्रतियोगिता डॉ. स्वाति शर्मा तथा डॉ. गौरव शुक्ल के निर्देशन में सम्पन्न हुई।

प्रतियोगिता में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के संगीत विभाग से डॉ. हर्षित तथा खालसा कॉलेज, पटियाला से डॉ. कुलदीप कुमार निर्णायक के रूप में उपस्थित थे। प्रतियोगिता में वैभव व्यास ने प्रथम, भूमिका सेवई ने द्वितीय तथा सेजल सोनी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पोस्टर मेकिंग व कार्टून मेकिंग प्रतियोगिता कमला नेहरू महिला महाविद्यालय व ललित कला विभाग, नया परिसर में सम्पन्न हुई। पोस्टर मेकिंग का विषय 'ऑनलाइन एजुकेशन सिस्टम' और 'रोल ऑफ मीडिया इन डिजिटल एराः कोरोना एण्ड नेचर' था। कार्टून मेकिंग का विषय था- 'न्यू एजुकेशन पॉलिसी' और 'माय ड्रीम इण्डिया'। इन प्रतियोगिताओं में कुल 34 प्रतिभागियों ने रंगों के माध्यम से अपनी कल्पना को उकेरा। डॉ. रेनू शर्मा ने नया परिसर केन्द्र

तथा डॉ. नम्रता स्वर्णकार ने कमला नेहरू महाविद्यालय में प्रतियोगिता का संचालन किया।

अमृतोत्सव का समापन (10 प्रतियोगिताओं का आयोजन)

अमृतोत्सव के अंतिम दिन संगीत व ललित कला संबंधी कुल 10 प्रतियोगिताएं सम्पन्न हुई। लोक गीत, शास्त्रीय गीत व सुगम संगीत प्रतियोगिता वर्चुअल माध्यम से सम्पन्न हुई तथा रंगोली, मांडणा, मेहन्दी, क्ले मॉडलिंग व फोटोग्राफी प्रतियोगिताएं छात्र सेवा मण्डल, कार्यालय पुराना परिसर में सम्पन्न हुई। लोक गीत प्रतियोगिता में कुल 34 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। यह प्रतियोगिता डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित के निर्देशन में सम्पन्न हुई। इन प्रतियोगिताओं में निर्णायक के रूप में डॉ. ममता व डॉ. मीनाक्षी बोराणा उपस्थित रहे। इस प्रतियोगिता में प्रिया ने प्रथम, विक्रम द्वितीय, वनिता रंग तथा महबूब खान ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। डॉ. हेमलता जोशी ने इन प्रतियोगिताओं का संचालन किया। शास्त्रीय व सुगम संगीत प्रतियोगिता डॉ. स्वाति शर्मा के निर्देशन में सम्पन्न हुई। इन प्रतियोगिताओं में कुल 32 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। प्रसिद्ध संगीतज्ञ डॉ. शैला माहेश्वरी व श्रीमती आभा माथुर इस प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में उपस्थित रहें। प्रसिद्ध संगीतज्ञ पं. मुकुंद क्षीरसागर विशिष्ट अतिथि थे। सुगम संगीत प्रतियोगिता में विक्रम प्रथम, मिलन व्यास द्वितीय तथा टीकमदान ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता में सुरेन्द्र पंवार ने प्रथम, विक्रम ने द्वितीय तथा वसुंधरा व्यास ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। मेंहन्दी प्रतियोगिता डॉ. अंजु अग्रवाल, डॉ. मीनाक्षी मीणा व डॉ. आशा राठी के निर्देशन में सम्पन्न हुई। इस प्रतियोगिता में कुल 14 प्रतिभागियों ने सहभागिता की जिसमें भाविका प्रथम, शिवानी द्वितीय व विमला तृतीय स्थान पर रहीं। इन प्रतियोगिता के निर्णायक सुश्री यामिनी व उर्वशी थीं। रंगोली, मांडणा, क्ले मॉडलिग प्रतियोगिता का विषय 'फ्रीडम' और 'माय फैमेली' तथा फोटोग्राफी का विषय - बर्ड और इमोशन था। ललित कला संबंधी प्रतियोगिता डॉ. रेणु शर्मा, डॉ. नम्रता स्वर्णकार के निर्देशन में सम्पन्न हुई। छात्र सेवा मण्डल की अध्यक्ष प्रो. मीना बरड़िया ने सबका स्वागत किया। इन प्रतियोगिताओं का संचालन सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. हितेन्द्र गोयल व सांस्कृतिक सह-समन्वयक डॉ. मीता सोलंकी द्वारा किया गया। मण्डल के सचिव डॉ. जालमसिंह रावलोत ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

विश्वविद्यालय ने मनाया संविधान दिवस

विश्वविद्यालय के केंद्रीय कार्यालय में विश्वविद्यालय परिवार ने संविधान दिवस मनाया गया। कुलपति ने उपस्थित शिक्षक, कर्मचारी एवं गणमान्य व्यक्तियों को संविधान की शपथ दिलाई। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय सिंडिकेट सदस्य, कुलसचिव, अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, निदेशक, शिक्षकगण, कर्मचारीगण एवं विद्यार्थी मौजूद रहें।

प्रो. के. आर. पटेल भौतिक शास्त्र विभागाध्यक्ष नियुक्त

विज्ञान संकाय के भौतिक शास्त्र विभाग में प्रो. (डॉ.) खरता राम पटेल को आगामी तीन वर्ष के लिए विभागाध्यक्ष नियुक्त किया गया हैं। विश्वविद्यालय में प्रो. के. आर. पटेल विभिन्न अकादमिक व प्रशासनिक पदों पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। प्रो. के. आर. पटेल वर्तमान में यूसिक के निदेशक, राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक का कार्यभार भी देख रहे हैं। प्रो. के. आर. पटेल को शैक्षणिक व शोध कार्य का 25 वर्ष का अनुभव हैं। इनके शोध कार्य का प्रकाशन ख्यातप्राप्त जर्नल में हो चुका हैं। इन्होंने 30 से अधिक राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर की कांफ्रेंस में भाग लेकर विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया हैं।

एमबीएम के 15 छात्रों का कैंपस से चयन

एमबीएम इंजीनियरिंग कॉलेज के 15 छात्रों का चयन स्किलरॉक टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड में हुआ। इनमे से पांच छात्रों का चयन सॉफ्टवेयर इंजीनियर ट्रेनी के पद पर आठ लाख के सालाना पैकेज पर हुआ। इनके नाम अंकित सिंह राठौड़, निधि जैन, ऐश्वर्या भूत्रा, माधव माहेश्वरी, श्वेता भट्टर हैं। दस छात्रों का चयन एसोसिएट सॉफ्टवेयर इंजीनियर ट्रेनी के पद पर 6 लाख के पैकेज पर हुआ। छात्र हैं: हिमाद्रि अपूर्वा, विशाल खंडेलवाल, गौरव सिंह जादौन, सेजल राठौर, प्रियंका, अक्षय जोशी, सिद्धार्थ शर्मा, रुद्राणी राखेचा, हेमंत सिंह सोलंकी, शोभा रामावत।

कबीर की साखियों और वाणी में जीवन का यथार्थः डॉ. दास

विश्वविद्यालय के संगीत विभाग और प्रौढ़ शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्त्वाधान में एक दिवसीय व्याख्यान का आयोजन संगीत विभाग के व्याख्यान कक्ष में आयोजित किया गया। कबीर आश्रम माधोबाग के गादीपति डॉ. रूपचंद्र दास ने कहा कि कबीर की साखियों और वाणी में जीवन का यथार्थ है। ये समाज को नई दिशा देते है।

संगीत विभागाध्यक्ष डॉ. स्वाति शर्मा ने डॉ. रूपचंद्र दास का अभिनंदन किया। कार्यक्रम के द्वितीय चरण में प्रौढ़ शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. ओ.पी. टाक ने कबीर के साहित्य को विद्यार्थी जीवन में आत्मसात करने का आह्वान किया।

केएन कॉलेज में बी.कॉम. छात्राओं का आमुखीकरण

कमला नेहरू महिला महाविद्यालय में बी. कॉम. प्रथम वर्ष व बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की छात्राओं का आमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान छात्राओं को प्रशासनिक तैयारियों के टिप्स दिए गए। मुख्य अतिथि रिटायर्ड आईएएस डॉ. महेन्द्र सुराणा ने कहा कि छात्राओं को अभी से तैयारी शुरु कर देनी चाहिए और समसामयिक घटनाक्रम से जुड़ी खबरों को पढ़ना-सुनना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी भी कार्य की सफलता के लिए जुनून जरूरी है, बिना संकोच नई चीजों को सीखें। विशिष्ट अतिथि विधि संकाय की अधिष्ठाता प्रो. चंदन बाला ने विलियम शेक्सपीयर के कथन फ्रायल्टी दाई नेम इज वुमन को चैलेंज के साथ आगे बढ़ने की सफलता का मंत्र बताया। अपने उद्बोधन में कुलपति प्रो. त्रिवेदी ने व्यक्ति को लगातार सीखते रहने और मन में शांति रखने की बात को सफलता का राज बताया। कॉलेज निदेशक प्रो. संगीता लूंकड ने अतिथियों का स्वागत किया।

ऑल इंडिया बोटैनिकल कॉन्फ्रेंस संपन्न

विवि ने पहली बार की इसकी मेजबानी – कुलपति

वनस्पति शास्त्र विभाग में 18 से 20 अक्टूबर तक 'दी इंडियन बोटैनिकल सोसाइटी' के बैनर तले "Plant Science Research in Present Scenario: Opportunities & Challenges" विषयक 44 वीं ऑल इंडिया बोटैनिकल कांफ्रेंस का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर प्रवीण चंद्र त्रिवेदी के अनुसार ये पहला अवसर है जब जोधपुर में इस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया है। मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त प्रोफेसर के.आर. शिवन्ना थे। इस अवसर पर आईबीएस के प्रेसिडेंट प्रोफेसर डी.के. माहेश्वरी, वाईस-प्रेसिडेंट डॉ. टी.एस. राणा, सेक्रेटरी प्रो. सेषु लवाणिया, वनस्पतिशास्त्र विभागाध्यक्ष प्रोफेसर सुनीता अरोड़ा मंचासीन रहे। इस अवसर पर वनस्पतिशास्त्र विभाग के समस्त सेवानिवृत्त प्रोफेसर्स को उनके द्वारा किये गए उल्लेखनीय कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। उद्घाटन सत्र में कुलपति प्रो. त्रिवेदी के सम्मान में विभिन्न वनस्पतिशास्त्रियों द्वारा लिखी गयी आठ पुस्तकों का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया।

कुलपति त्रिवेदी ने किया भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण व शुष्क अंचल क्षेत्रीय केंद्र का दौरा

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रवीण चंद्र त्रिवेदी ने 22 नवंबर को भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के शुष्क अंचल क्षेत्रीय केंद्र का दौरा किया। वैज्ञानिक-ई तथा कार्यालय अध्यक्ष डॉ. एस.एल. मीना ने प्रो. त्रिवेदी को संस्थान में संचालित हो रहे शोध कार्यों की जानकारी दी। प्रो. त्रिवेदी ने संस्थान के उद्यान, पादपालय, पुस्तकालय एवं संग्रहालय का अवलोकन किया। इस अवसर पर प्रो. त्रिवेदी द्वारा दुर्लभ एवं संकटग्रस्त पादप प्रजाति मोरिंगाकोन्कनेंसिस के पौधे का उद्यान में रोपण किया गया। अवलोकन के पश्चात् आयोजित बैठक में प्रो. त्रिवेदी ने जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय एवं भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के मध्य एमओयू की आवश्यकता बताई जिससे शोध के क्षेत्र में दोनों संस्थान मिलकर कार्य कर सके।

डॉ. खीची वाणिज्य संकाय अधिष्ठाता नियुक्त

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति महोदय ने एक आदेश जारी कर व्यापार, वित्त एवं अर्थशास्त्र विभाग के प्रोफेसर डॉ. डूंगर सिंह खीची को वाणिज्य एवं प्रबंधन अध्ययन संकाय के अधिष्ठाता के पद पर नियुक्त किया है।

प्रो. के.ए. गोयल बने सायंकालीन अध्ययन संस्थान के निदेशक

कुलपति ने आदेश जारी कर बिजनेस, फाइनेंस एंड इकॉनामी के प्रोफेसर कृष्ण अवतार गोयल को सायं-कालीन अध्ययन संस्थान का निदेशक नियुक्त किया है। इनकी नियुक्ति अगले आदेश तक रहेगी।

डॉ. माहेश्वरी पीजी गर्ल्स हॉस्टल वार्डन नियुक्त

विश्वविद्यालय के नया परिसर में स्थित पीजी गर्ल्स हॉस्टल के वार्डन के पद पर हिन्दी विभाग की सहायक आचार्या डॉ. कीर्ति माहेश्वरी को नियुक्त किया गया। डॉ. माहेश्वरी की नियुक्ति अगले आदेश तक रहेगी। डॉ. माहेश्वरी को निवर्तमान हॉस्टल वार्डन डॉ. रेणू शर्मा के स्थान पर नियुक्त किया गया।

प्रो. कौशल ने गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार में दिया व्याख्यान

'भारतीय दर्शन एवं समकालीन साहित्य परम्परा' विषय पर संस्कृत विभाग की प्रो. सरोज कौशल ने मानव संसाधन विकास केन्द्र, हिसार में पुनश्चर्या कार्यक्रम में व्याख्यान दिया।

प्रो. कौशल ने भारतीय दर्शन तथा समकालीन संस्कृत साहित्य में अध्यात्म तथा व्यक्तित्व विकास के सम्बन्ध में अनेक सूत्रों का अन्वेषण कर नूतन शैली से विषय का प्रस्तुतिकरण किया।

प्रो. कौशल का ब्लॉग हुआ प्रकाशित

राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर के द्वारा कालिदास जयन्ती के अवसर पर प्रो. सरोज कौशल का ब्लॉग प्रकाशित किया गया। इस ब्लॉग को अब तक दो हजार से अधिक व्यूज प्राप्त हो चुके हैं।

गणतंत्र दिवस परेड के लिए एनएसएस-जेएनवीयू के पाँच स्वयं सेवकों का चयन

पूर्व गणतंत्र दिवस परेड 2022 के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना-जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय की इकाई से पाँच स्वयं सेवकों का चयन हुआ। चयनित पाँच स्वयं सेवक क्रमशः जयसूर्या, गिरीराज, भवानी सिंह, चन्द्रिका एवं दिव्या विश्नोई को चयनित किया गया है। राजस्थान से चयनित एनएसएस के 30 छात्र व 30 छात्राओं में से जेएनवीयू जोधपुर के कुल 5 स्वयंसेवक हैं। इस परेड के लिए सभी स्वयं सेवकों का दस दिवसीय प्रशिक्षण 18 अक्टूबर से 27 अक्टूबर तक बियानी कॉलेज ऑफ साइंस एंड मैनेजमेंट कॉलेज कलवर, जयपुर में होगा।

प्रो. सरोज कौशल ने अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुरुक्षेत्र में दिया व्याख्यान

प्रो. सरोज कौशल ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र में छठी अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'गीता में आदर्श मानव की परिकल्पना' विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो. कौशल ने श्रीमद्भगवद्गीता के लोकसंग्रह, स्थितप्रज्ञ, कर्मयोग, भक्तियोग तथा ज्ञानयोग आदि अनेक अवधारणाओं की व्याख्या करते हुए गीतोक्त आदर्श मानव की प्रभावी स्थापना की। द्वादश अध्याय में ''यो मे भक्तः स मे प्रियः'' इसके अन्तर्गत श्री कृष्ण ने जिन गुणों का गान किया है वे समस्त गुण मानव को उत्कृष्टता की ओर अग्रसर करते हैं।

'वसीयत एवं वसीयत का डिजिटिलाईजेशन' पर व्याख्यान

विश्वविद्यालय के विधि संकाय में एमिटी ऑफ लॉ, एमिटी विश्वविद्यालय, जयपुर की प्रो. सरोज बोहरा का 'वसीयत एवं वसीयत का डिजिटिलाईजेशन' विषय पर व्याख्यान संकाय के विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया गया। प्रो. बोहरा ने वसीयत के प्रकार एवं महामारी के समय में वसीयत से सम्बन्धित कानून में समयोचित परिवर्तन करने के लिए सुझाव पर गहन चर्चा कर विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं को भी संतुष्ट किया। संकाय अधिष्ठाता प्रो. चंदनबाला ने डॉ. सरोज बोहरा का स्वागत किया। व्याख्यान में डॉ. पुष्पेन्द्र मूसा, डॉ. शीतल प्रसाद मीना एवं अधिवक्ता डॉ. एकलव्य भंसाली उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. निधि संदल ने किया।

विधि संकाय में मानवाधिकारों पर विचार गोष्ठी संपन्न

विधि संकाय में मानवाधिकार दिवस मनाया गया। इस अवसर पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विधि संकाय के पूर्व प्रो. सुरेश मेहता ने की। विधि संकाय की अधिष्ठाता प्रो. चंदनबाला एवं प्रो. सुरेश मेहता ने सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का स्वागत किया तथा मानव अधिकारों से सम्बन्धित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विधि से संबंधित दस्तावेजों एवं प्रावधानों की चर्चा की। विधि संकाय के शिक्षक डॉ. शीतल प्रसाद मीना ने जनजातियाँ एवं मानवाधिकार विषय पर अपने विचार रखे। डॉ. दलपत सिंह ने मानव अधिकार, कर्त्तव्य एवं नैतिकता के परस्पर सम्बन्धों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में विधि के विद्यार्थियों रामू दुबे, भावना चौधरी, तान्या करेल, प्रज्ञा, जाह्नवी सोनी, मधुराज, आदित्य आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। अध्यक्षता कर रहे प्रो. मेहता ने विधि के विद्यार्थियों को विधि के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विधि के विद्यार्थी समाज को बदलने की ताकत रखते हैं।

कार्यक्रम में डॉ. विनोद कुमार बागोरिया, डॉ. पुष्पेन्द्र कुमार मूसा, डॉ. कुचेटाराम एवं डॉ. विनोद कुमार मीना उपस्थित रहे। प्रो. सुनील आसोपा ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन डॉ. निधि संदल ने किया।

पत्रिका स्थापना दिवस पर छात्र सेवा मंडल में संभाषण प्रतियोगिता

राजस्थान पत्रिका, जोधपुर संस्करण के 43वें स्थापना दिवस के मौके पर छात्र सेवा मंडल, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय एवं राजस्थान पत्रिका के संयुक्त तत्त्वावधान में 15 दिसंबर को "मेरे सपनों का जोधपुर" विषयक संभाषण प्रतियोगिता का आयोजन वाणिज्य संकाय के पीजी पुस्तकालय, पुराना परिसर में किया गया। इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने कहा कि सपनों का शहर कोई भी हो सकता है, लेकिन अपनों का शहर जोधपुर ही होगा। उन्होंने शहर की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत के साथ भविष्य में विकास का खाका खींचा। मुख्य अतिथि वाणिज्य संकाय अधिष्ठाता व जेएनवीयू शिक्षक संघ अध्यक्ष प्रो. डूंगर सिंह खींची ने कहा कि भौतिक विकास के साथ सांस्कृतिक विकास भी जरूरी है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए छात्र सेवा मंडल की अध्यक्षा प्रो. मीना बरडिया ने मंडल की गतिविधियों की जानकारी दी। प्रतियोगिता में यश थानवी-प्रथम, नायब खान-द्वितीय, दीक्षिता सोनी व जोगराज सिंह-तृतीय रहे। उर्मिला बंता व विवेक खीरिया को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया।

सम्पादक मण्डल

प्रधान संरक्षक

प्रो. (डॉ.) प्रवीण चन्द्र त्रिवेदी

कुलपति

प्रधान सम्पादक

प्रो. सरोज कौशल

संस्कृत विभाग

ले-आउट

महेश आचार्य (क्रिएशन पॉइण्ट)

मनीष प्रजापत

जनसंपर्क अधिकारी कार्यालय सदस्य

मुकेश सक्सेना

दीपक दवे

प्रकाशक

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

Coronavirus Safety and Precaution

1 Social Distance

2 Carry a Sanitizer

3 Wear a Mask

4 Namaste Over Handshake

5 Don't Touch Face

6 Have a vaccine